साप्ताहिक

जागत गांव हमार

पंचायत की विकास गाथा, सरकार तक

RNI-MPHIN/2015/72544

चौपाल से भोपाल तक

भोपाल, सोमवार, 13-19 मई 2024 वर्ष-10, अंक-4

भोपाल, इंदौर, उज्जैन, सागर, मुरैना, रीवा, शिवपुरी से एक साथ प्रकाशित

पृष्ठः-8,मूल्यः- 2 रुपए

रखवाली के लिए लगाए खूंखार कुत्ते, एक भी हुआ चोरी तो लाखों का नुकसान

किसान ने उगाए खास आम! भाव ढाई लाख रुपए किलो

भोपाल। जागत गांव हमार

गर्मियों का मौसम आ चुका है। बात अगर गर्मी के फलों की करें, तो यही है ज्यादातर लोगों के पसंदीदा फल आम का सीजन। आम प्रेमी गर्मी का इंतजार करते रहते हैं। आम की कई वेरायटी भारत में पहले से थी, लेकिन अब किसान कुछ ऐसी नस्लों को भी उगाने लगे हैं, जो पहले सिर्फ विदेशों में पाई जाती थी। जबलपुर के किसानों ने इस साल तइयो नो तमांगो आम को उगाने में सफलता पाई है। ये कोई ऐसा-वैसा आम नहीं है। इसे दुनिया के सबसे महंगे आम में गिना जाता है। इसकी कीमत ढाई लाख प्रति किलो तक जाती है। एक आम काफी बड़ा होता है। जबलपुर में इस साल इसकी पैदावार की गई है। लेकिन आम के पकने से लेकर बिकने तक इसकी रखवाली चिंता का विषय बन गई है। ये आम इतने महंगे है कि इसका चोरी होना किसान को महंगा पड़ जाएगा। इस कारण इनकी रखवाली के लिए खूंखार कुत्तों को लगाया गया है।

बगीचों में दे रहे पहरा

जबलपुर से पच्चीस किमी दूर चरगवां के बगीचों में तइयो नो तमांगो को उगाया गया है। इन आमोन की रखवाली किसानों ने माली के भरोसे नहीं छोड़ी है। इनकी सुरक्षा के लिए गार्ड्स को रखा गया है। इनके साथ खूंखार कुत्ते भी लगाए गए हैं। अगर कोई आम को चुराने की कोशिश करते पकड़ा गया तो ये कुत्ते उन्हें नोच डालेंगे।इस आम की खेती संकल्प सिंह परिहार ने की है। उन्होंने बताया कि तइयो नो तमांगो आम की कीमत ढाई लाख प्रति किलो से शुरू होती है।

मौसम ने पहुंचाया नुकसान

किसान ने बताया कि इस साल मौसम की वजह से उन्होंने पहले ही काफी नुकसान झेला है। आम की बौर और अमिया को काफी नुकसान हुआ था, जो आम बचे रह गए, अब उनसे ही उम्मीद है। बगान के साठ प्रतिशत आम पहले ही बर्बाद हो गए हैं। ऐसे में अब आम की चोरी उनसे बर्दाश्त नहीं होगी। इस कारण उन्होंने आम की सुरक्षा के कड़े इंतजाम किए हैं। संकल्प सिंह के बगान में बीस से अधिक आम की किस्मों का उत्पादन किया गया है। इसमें देसी आम भी शामिल है लेकिन सबसे ज्यादा चर्चा तइयो नो तमांगो आम की ही है।

सीएम मोहन यादव ने की बड़ी घोषणा

गौशाला की राशि सरकार करेगी दोगुना

झाबुआ। जिले की ग्राम पंचायत पिठड़ी के अंबापाडा में श्रीमद् भागवत कथा के समापन पर हजारों श्रद्धालुओं की भीड़ उमड़ी। इस बीच में प्रदेश के मुख्यमंत्री डॉ.मोहन यादव भी कथा स्थल पहुंचे। हेलीपेड पर उनका स्वागत किया गया। श्रीमद् भागवत कथा वाचन कर रहे पंडित कमल किशोर नगर का स्वागत किया गया। इस मौके पर मुख्यमंत्री ने कहा कि आज के इस समय में हर जगह भागवत कथा होना चाहिए। मैं गुरुदेव के श्री चरणों में प्रणाम करते हुए क्षमा चाहता हूं कि कथा के बीच में उपस्थित हुआ हूं। अतः में गुरुदेव से एक क्षमा प्रार्थी हूं। उन्होंने यह भी कहा कि प्रदेश में समस्त गौशालाओं की राशि को दुगना की जाएगा जिससे गौ माता का

संरक्षण हो सके सभी देवता शरीर धारण कर पृथ्वी पर अवतीर्ण हुए। ठीक उसी तरह आज हमारे बीच गुरुदेव देवताओं के रूप में आए हैं। सभी लोगों को गौ-रक्षा करने से 33 करोड़ देवताओं का लाभ मिलता है। प्रत्येक व्यक्ति को घर-घर गौ-माता पालना चाहिए। उन्होंने कहा कि आज अयोध्या में राम मंदिर बनने से श्रीराम मुस्कुरा रहे हैं। मोदी इस देश के लिए गौरव बढ़ा रहे हैं, मोदी का देश में एक भी मकान नहीं है मोदी जो कर रहे हैं देश के लिए कर रहे हैं। यहां उपस्थित समस्त सनातनियों से मैं अपील करता हूं कि वह अपने सनातन में ही रहे किसी के बहकावे में ना आकर धर्म परिवर्तन करें। इस कार्यक्रम में महिला बाल विकास मंत्री निर्मला भूरिया, वन मंत्री नागरसिंह चौहान अन्य नेता उपस्थित थे।

प्रशासन ने नहीं किए थे बचाव के इंतजाम

बेमौसम बरसात से पन्ना में हजारों टन गेहूं भीगा

पन्ना। जागत गांव हमार

मध्य प्रदेश सरकार के तमाम प्रयासों के बाद भी किसानों की फसल इन दिनों खुले आसमान के नीचे वेयरहाउसों में रखी हुई हैं। प्रशासन ने निर्देश दिए थे कि गेहूं खरीदी के बाद इन फसलों को सीधे गोदाम में पहुंचाकर सुरक्षित रखा जाए। लेकिन, पन्ना जिले में प्रशासन के आदेशों की खुलेआम धज्जियां उड़ रही हैं। जिसका खामियाजा भी उठाना पड़ रहा है। पन्ना जिले के सिमरिया क्षेत्र में ओलाबारी और पानी के साथ तेज हवा चली। जिससे गोदाम के बाहर रखा हजारों क्विंटल गेहूं भीग कर बर्बाद हो गया। प्रशासन ने आदेश दिए थे कि गेहूं तुलाई के बाद सीधे गोदाम में रखा जाए, लेकिन इसे गोदाम में नहीं रखा गया। जिससे बेमौसम बरसात से पूरा गेहूं खराब होने की कगार पर है। कहीं न कहीं नागरिक आपूर्ति विभाग की लचर कार्य प्रणाली का खामियाजा प्रशासन या फिर किसानों को भुगतना पड़ रहा है।

नर्मदापुरम में 20 गौशालाएं ऐसी, जहां एक भी गाय नहीं

केसला में गौशाला के पास की जमीन शराबियों का अड्डा

परिसर में लगा शिलालेख टूटा, पानी के कुंड सूखे पड़े और पांच एकड़ का परिसर

गौशाला में गाय नहीं! बन रहा शादियों का भोजन

भोपाल। जागत गांव हमार

नर्मदापुरम में मनरेगा से मुख्यमंत्री गौ-सेवा योजना में बनकर तैयार 20 गौशालाएं शुरू नहीं हो पा रही हैं। ताकू में बनी गौशाला में गौ-सेवा के बजाय शादी का भोजन बनाया जा रहा है। इसके गेट लकड़ी से बंद हैं। केसला में गौशाला के पास की जमीन को शराबियों ने अड्डा बना लिया है। हालांकि रंढाल जैसी कुछ गौशालाएं भी हैं, जहां बड़ी संख्या में गायों की सेवा हो रही है। जिले में बारिश के दौरान आवारा मवेशी सड़कों पर आने की बड़ी सिंगानामा, सिवनी मालवा के रीछी कोलगांव, जीरा बेह में समस्या है। गौशाला चार लकड़ियों से बंद कर रखी है। परिसर में लगा शिलालेख टूटा है। पानी के कुंड सूखे पड़े हैं। 5 एकड़ का परिसर है। उपयोग नहीं हो रहा है। परिसर में पंगत के दोना-पत्तल और डिस्पोजल पड़े हैं। सरपंच रजनी बाई ने बताया कि जल्द चालू कराएंगे। मौसम बिगड़ने से एक शादी का भोजन बनाने दिया था।

सवा लाख रुपए भी मिले

2020 से गौशाला चल रही हैं। 66 गाय और बैल हैं। बछड़ों को कुछ गाय दूध नहीं पिला रही हैं इसलिए उन्हें बाटल से दूध पिलाया जा रहा है। ग्राम पंचायत को गौ-सेवा के लिए सवा लाख रुपए भी मिले हैं। सचिव विजय नागवंशी ने बताया कि देखरेख के लिए एक व्यक्ति नियुक्त किया है।

यहां गौशाला बनकर तैयार

नर्मदापुरम के साकेत, माखननगर के गूजरबाड़ा, बज्जरबाड़ा, केसला के ताकू, पिपरिया के माथनी, डेठी, सोहागपुर के मगरिया। (8 गौ-शाला फिनिशिंग स्तर पर है।)

- गौशालाओं के संचालन के लिए समितियों से बात की जाएगी। जहां आगे नहीं आएंगे वहां पंचायतें देखेंगी। इन्हें जल्द चालू करेंगे। अधूरी पड़ी गौशालाओं को जल्द बनवाएंगे।

एसएस रावत, सीईओ, जिपं, नर्मदापुरम

- 18 संस्थाओं का पंजीयन हो गया है। जो नई गौशाला बनेंगी उनके शुरू होने पर आगे की प्रक्रिया होगी। अभी 47 लाख रुपए मार्च तक का 16 गौशालाओं के लिए दिया गया है।

डॉ. संजय अग्रवाल, उप संचालक, पशु चिकित्सा विभाग

टमाटर की कीमतें 40 फीसदी लुढ़कीं, राज्यों से आवक बढ़ी

भोपाल। जागत गांव हमार

तापमान बढ़ने के साथ ही टमाटर की खपत बढ़ गई है, लेकिन इसकी कीमतों में तेजी से गिरावट दर्ज की गई है। मप्र सहित कई राज्यों से टमाटर मंडियों में आने से कीमत में 40 फीसदी की गिरावट दर्ज की गई है। यूपी में टमाटर की न्यूनतम कीमत प्रति क्विंटल कीमत 1600 रुपए पर आ गई है। जबकि, दिल्ली में यह कीमत गिरकर 800 रुपए पर आ गई है। कीमतों में गिरावट से ग्राहक को तो फायदा पहुंचेगा लेकिन, किसानों को उचित दाम नहीं मिलने की चिंता सता रही है। मध्यप्रदेश की मंडियों में टमाटर की आवक बढ़ने से कीमतों में गिरावट दर्ज की गई है। हिमाचल प्रदेश, राजस्थान, उत्तर प्रदेश, हरियाणा और पंजाब से आवक बढ़ गई है।

पशु पालक होंगे मालामाल, दूध भी देती है रिकॉर्डतोड़

सात से आठ बार बच्चे देती कालाहांडी नस्ल की भैंस

भोपाल। जागत गांव हमार

ग्रामीण इलाकों के अलावा शहरी इलाकों में भी भैंस के दूध और उससे बने उत्पादों की मांग लगातार बढ़ रही है। इसके चलते शहर के लोग भी पशुपालन में रुचि दिखा रहे हैं। भैंस पालने से अधिक लाभ कमाने के लिए पशुपालक उन नस्लों की भैंसों को पालते हैं जिनसे उन्हें अधिक लाभ मिल सके। ऐसे में भैंस की कालाहांडी नस्ल काफी फायदे का सौदा मानी जाती है। हालांकि, इस नस्ल के बारे में बहुत कम लोग जानते हैं। आपको बता दें कि यह नस्ल अपने पूरे जीवनकाल में 7 से 8 बच्चों को जन्म देती है। वहीं दूध देने में इसने कई भैंसों को भी पीछे छोड़ दिया है। आइए जानते हैं इस नस्ल की और क्या-क्या खासियत है। इस नस्ल को उड़ीसा में कालाहांडी और आंध्र प्रदेश में पेद्दाकिमेडी के नाम से जाना जाता है। ये भैंसे पूरे गजपति जिले और उड़ीसा के गंजम और रायगड़ा जिले के कुछ हिस्से के अलावा आंध्र प्रदेश के पहाड़ी इलाकों में देखी जाती है। इन नस्ल का रंग काले से लेकर काले भूरे रंग तक होता है। इन नस्लों के भैंस का माथा चपटा होता है और उस पर सुनहरे बाल होते हैं। बहुत से जानवरों की गर्दन के पास हार के रूप में अनोखे सफेद निशान पाए जाते हैं। दूध और बोझा ढोने के लिए इस भैंस के उपयोग के अलावा, सींगों का उपयोग हस्तशिल्प और घरेलू सामान बनाने में किया जाता है। जो देशी इलाके में इन भैंसों की आर्थिक उपयोगिता को बढ़ाता है।

7 से 8 बार बच्चे देती है ये नस्ल| इस नस्ल की भैंस अपना पहला बछड़ा लगभग 4 साल की उम्र में देती है और जीवन भर 7 से 8 बार बच्चे देती हैं। औसतन 18 महीने का अंतराल रखती है। परलाखेमुंडी भैंसें मध्यम दूध देने वाली हैं और उनकी औसत दैनिक दूध उपज लगभग 3 से 5 लीटर है। पूरे ब्यांत में दुग्ध उत्पादन 737 से 800 लीटर है। ये भैंसें अपने मूल क्षेत्र में अपनी कार्य क्षमता और रोग प्रतिरोधक क्षमता के लिए जानी जाती हैं।

आवश्यकतानुसार दें भोजन

इस नस्ल की भैंसों को आवश्यकतानुसार भोजन की जरूरत होती है। आम तौर पर इन्हें भोजन के रूप में फली वाला चारा और सूखे मेवे पसंद होते हैं। उनके भोजन में ऐसे तत्व शामिल करें जो ऊर्जा, प्रोटीन, कैल्शियम, फास्फोरस और विटामिन ए आदि से भरपूर हों। आप उन्हें अनाज, तिलहन की खली और मिनरल युक्त भोजन दे सकते हैं।

भैंसों को शेड में रखने की जरूरत

इन नस्लों की भैंसों को शेड में रखना अधिक लाभदायक होता है। अनुकूल परिस्थितियां उनके विकास में सहायक होती हैं। तेज धूप, बर्फबारी और अत्यधिक ठंड जैसे मौसम में इन्हें खुले वातावरण में रखना सही नहीं है। साथ ही उनके शेड में स्वच्छ हवा और पानी की सुविधा होनी चाहिए।

ग्रामीण क्षेत्रों में तेजी से बढ़ रहा पशुपालन का चलन

पशु चॉकलेट से बढ़ाता है दूध! पालक जान लें लाभ और सावधानियां

भोपाल। जागत गांव हमार

देश के ग्रामीण इलाकों में खेती-किसानी के अलावा पशुपालन का चलन तेजी से बढ़ रहा है। खेती-किसानी के बाद पशुपालन ग्रामीण अर्थव्यवस्था का दूसरा सबसे बड़ा हिस्सा है, जिससे किसान और पशुपालक अच्छा मुनाफा कमाते हैं। आमतौर पर दूध और उससे बने उत्पादों की बढ़ती मांग के कारण गाय-भैंस पालने का चलन भी बढ़ा है। लेकिन कई बार पशुपालक अपने पशुओं के दूध देने की क्षमता में हुई कमी से परेशान रहते हैं। कम दूध देने की वजह से पशुपालकों को नुकसान का भी सामना करना पड़ता है। यही वजह है कि पशुपालक दूध बढ़ाने के तरह-तरह के नुस्खे अपनाते हैं। नुस्खों से कई बार दूध बढ़ते भी हैं, लेकिन कई बार नुस्खे काम नहीं करते। लेकिन हाल ही में भारतीय पशु चिकित्सा संस्थान, ने पशुओं के लिए एक ऐसा स्पेशल चॉकलेट विकसित किया है, जो पशुओं में दूध उत्पादन की क्षमता को काफी बढ़ा सकती है। ऐसे में आइए जानते हैं क्या है पशु चॉकलेट और क्या हैं इसके लाभ। इस चॉकलेट को बनाने में बहुत सारे पोषक तत्वों का ध्यान रखा गया है, ताकि इसे खाने से गाय-भैंस की भूख भी बढ़े और साथ में पाचन तंत्र भी बेहतर हो। इस चॉकलेट में मौजूद कैल्शियम, जिंक, फाइबर, विटामिन और पोषक तत्व पशुओं के कमजोरी को भी दूर किया जा सकता है। इसमें प्रोटीन की प्रचुर मात्रा पशुओं को तंदुरुस्त बनाती है और इम्यूनिटी को बढ़ाती है। इम्यूनिटी बढ़ने से गाय-भैंस जल्दी किसी रोग की चपेट में नहीं आते और लंबे समय तक सेहतमंद रहते हैं। इसे खाने से पशुओं का दूध उत्पादन में भी बढ़ोतरी होती है।

पशुओं को कैसे खिलाएं चॉकलेट

बात करें पशुओं को इस चॉकलेट को खिलाने कि तो पशुपालक अपने वयस्क पशुओं के सामने चाटने के लिए इस चॉकलेट को 2 से 3 घंटे के लिए रख दें। यदि चॉकलेट अच्छे से सूखा नहीं है तो एक वयस्क पशु को 300 से 400 ग्राम प्रतिदिन एक लीटर पानी में घोलकर भूसे के ऊपर छिकड कर खिला सकते हैं। वहीं पशुओं के छोटे बच्चे यानी 6 महीने से कम समय वाले पशुओं को ये चॉकलेट नहीं खिलाना चाहिए। साथ ही जो बच्चे घास-भूसा खाते हैं उन्हें ये चॉकलेट 50 से 60 ग्राम की मात्रा में दें।

रखें सावधानियां

पशु चॉकलेट को केवल वयस्क गाय, भैंस, बकरी और भेड़ को ही चाटने के लिए देना चाहिए। इस पशु चॉकलेट को घोड़े, गधे और सुअर को चाटने के लिए नहीं देना चाहिए। इसके अलावा इस पशु चॉकलेट को जुगाली करने वाले 6 महीने में कम आयु वाले पशुओं को नहीं देना चाहिए। पशु चॉकलेट को कभी भी पशु जब खाली पेट हो तब न दें। इसके अलावा ये भी ध्यान रखें कि चॉकलेट में 10 फीसदी से अधिक नमी नहीं होनी चाहिए।चॉकलेट को खिलाने के बाद पशुओं को भरपूर मात्रा में पानी पिलाना चाहिए।

आहार में पशुपालक बढ़ाएं प्रोटीन की मात्रा

गाय को हर दिन खाने के साथ देना चाहिए नमक

भोपाल। जागत गांव हमार

जिस तरह से इंसानों के भोजन में पोषक तत्व जरूरी होते हैं, ठीक उसी तरह पशुओं को भी इनकी जरूरत होती है। उनके भोजन में भी प्रोटीन और बाकी पोषक तत्वों जैसे सोडियम की सही और संतुलित मात्रा होनी चाहिए। आपको अगर यह लगता है कि पशुओं को स्वाद नहीं आता और उनके लिए इसकी कोई अहमियत नहीं है, तो आप गलत सोचते हैं। पशुओं को भी इनका स्वाद आता है और वह इनके बारे में बखूबी जानते हैं। आज हम आपको बताते हैं कि आपके घर में अगर कोई गाय है तो उसे आपको किस मात्रा में प्रोटीन और नमक आपको देना चाहिए। पहले हम आपको बताएंगे कि गाय के लिए कितना प्रोटीन जरूरी होता है। अगर आप गाय को पशु आहार दे रहे हैं और इसमें हरा चारा शामिल है तो सान्द्र आहार में 10 से 12 प्रतिशत तक पाचक प्रोटीन होना चाहिए। वहीं अगर हरा चारा नहीं है तो फिर सान्द्र आहार में इसकी मात्रा कम से कम 18 फीसदी होनी चाहिए। अब अगर नमक की मात्रा की बात करें तो अगर पशु का वजन 100 किलोग्राम है तो फिर 8 से 10 ग्राम खाने का नमक उनके आहार का हिस्सा होना चाहिए। वहीं कई तरह के मिनिरल्स भी उनकी डाइट में शामिल होने चाहिए।

गायों के लिए क्यों जरूरी है नमक

गाय या फिर बाकी पशुओं के लिए भी नमक बहुत जरूरी होता है। इसकी कमी होने पर का शरीर सोडियम और क्लोराइड का उत्सर्जन कम कर देता है। अगर उन्हें बहुत समय तक नमक न मिले तो वो आस-पड़ोस में पड़े कपड़े, लकड़ी और मलमूत्र जैसी वस्तुओं को खाने और चाटने लगता है। कई टेस्ट में यह बात वैज्ञानिकों ने साबित की है कि जिन गायों को नमक नहीं खिलाया जाता है, उनकी भूख दो-तीन हफ्ते में कम हो जाती हैं। नमक की कमी से पशु आहार में मौजूद प्रोटीन और ऊर्जा का ठीक से प्रयोग नहीं हो पाता है। इसकी वजह से जानवर का वजन कम हो जाता है। अगर गाय या कोई और पशु दूध देने वाला है तो दूध के उत्पादन में कमी आ जाती है। ज्यादा दूध देने वाली गायों में नमक की कमी के लक्षण जल्दी और साफ नजर आते हैं। गायों में नमक की कमी को पूरा करने में करीब एक साल का समय लग जाता है।

14 हजार टन नॉन बासमती निर्यात को मंजूरी दी

बैन के बीच सफेद चावल निर्यात पर केंद्र का बड़ा फैसला

भोपाल। जुलाई 2023 से नॉन बासमती सफेद चावल के निर्यात पर केंद्र सरकार ने बैन लगा रखा है। ताकि, घरेलू जरूरत को पूरा किया जा सके और कीमतों को नियंत्रण में रखा जा सके। निर्यात बंदी के बीच अब केंद्र सरकार ने 14 हजार टन चावल निर्यात को मंजूरी दे दी है। यह चावल निर्यात नेशनल कोऑपरेटिव एक्सपोर्ट्स लिमिटेड के जरिए हो सकेगा। विदेश व्यापार महानिदेशालय की ओर से जारी नोटीफिकेशन के अनुसार केंद्र सरकार ने मॉरीशस को गैर बासमती सफेद चावल के निर्यात की मंजूरी दे दी है। मॉरीशस को 14,000 टन चावल निर्यात करने को कहा है। व्यापार महानिदेशालय के अनुसार चावल के निर्यात प्रक्रिया को नेशनल को-ऑपरेटिव एक्सपोर्ट्स लिमिटेड के जरिए पूरा किया जाएगा।

इन देशों के लिए निर्यात की अनुमति भी दी गई

महानिदेशालय के अनुसार निर्यात की अनुमति अन्य देशों को उनकी खाद्य सुरक्षा जरूरतों को पूरा करने के लिए सरकार की ओर से तय मात्रा के साथ अनुमति दी गई है। मॉरीशस को चावल निर्यात छूट देने से पहले नेपाल, कैमरून, कोटे डी आइवर, गिनी गणराज्य, मलेशिया, फिलीपींस, सेशेल्स, संयुक्त अरब अमीरात, सिंगापुर, कोमोरोस, मेडागास्कर, इक्वेटोरियल गिनी, मिस्र और केन्या को चावल की इस किस्म के निर्यात की अनुमति दी जा चुकी है।

स्कीम के लिए 400 लाख टन चावल की जरूरत

घरेलू कीमतों को नियंत्रित करने और घरेलू खपत पूरी करने के लिए केंद्र सरकार ने जुलाई 2023 में गैर-बासमती सफेद चावल के निर्यात पर प्रतिबंध लगा दिया था। बता दें कि खाद्यान्न स्कीम के तहत सरकार लाभार्थियों को मुफ्त चावल उपलब्ध कराती है। केंद्र सरकार को कल्याणकारी खाद्यान्न योजनाओं के लिए सालाना 400 लाख टन चावल की जरूरत पड़ती है। लोकसभा चुनाव के मद्देनजर आपूर्ति बरकरार रखने के लिए निर्यात बंदी लगाई गई थी।

2022 से घरेलू खपत के लिए प्रयासरत सरकार

धान की फसल रकबा में गिरावट के कारण कम उत्पादन की चिंताओं के बीच केंद्र सरकार ने सितंबर 2022 में टूटे चावल के निर्यात पर प्रतिबंध लगा दिया था। इसके बाद केंद्र ने अगस्त के अंत में बासमती चावल के निर्यात पर अतिरिक्त मिनिमम फ्लोर प्राइस लागू किया था। इसके बाद गैर-बासमती सफेद चावल के निर्यात पर रोक लगाई गई। इसके बाद मार्च 2024 में सरकार ने उबले चावल पर 20 प्रतिशत निर्यात शुल्क बढ़ा दिया था।

प्रदेश के कई जिलों में युवाओं को ड्रोन संचालन में किया जा रहा प्रशिक्षित

अब ड्रोन 'भैया' भी कृषि को तकनीकी संबल संग देंगे स्वरोजगार को गति

ड्रोन संचालन से पहले पायलट लाइसेंस लेना अनिवार्य

-कीटनाशक व दवा के छिड़काव में होगा ड्रोन का प्रयोग

जबलपुर। जागत गांव हमार

खेतों में अब ड्रोन दीदी के बाद ड्रोन वाले 'भैया' भी नजर आएंगे। ड्रोन का प्रशिक्षण लेकर युवाओं को निशुल्क प्रदर्शन करके दिखा रहे जबलपुर के निखिल साहू का कहना है कि वह स्वयं और अन्य युवाओं को भविष्य में आत्मनिर्भर होने की तरफ ले जाने का प्रयास कर रहे हैं। खेती को तकनीक से जोड़ने से समय और पैसों दोनों की बचत होगी। दस ड्रोन लेकर वे जिले के विभिन्न गांवों में पहुंचते हैं और किसानों-युवाओं को इसके फायदे समझाते हैं। वर्तमान में एक ड्रोन की कीमत 5 से 15 लाख रुपए तक है। ड्रोन संचालन से पहले पायलट लाइसेंस लेना अनिवार्य है। भोपाल और इंदौर स्थित प्रशिक्षण केंद्र से सात दिन का प्रशिक्षण लेने के बाद शासन की योजना का लाभ और ड्रोन में सब्सिडी भी मिल जाती है। 30 हजार रुपए के शुल्क वाले इस प्रशिक्षण पर सब्सिडी देकर फिलहाल 18 हजार रुपए लिए जा रहे हैं। बता दें कि खेती में ड्रोन के उपयोग को लेकर दो वर्षों से जबलपुर स्थित जवाहरलाल नेहरू कृषि विश्वविद्यालय में कार्य चल रहा है। कृषि अभियांत्रिकी विभाग के संचालक इंजी। राजीव चौधरी कहते हैं कि प्रदेश में पहली बार किसानों को ड्रोन अनुदान पर उपलब्ध कराया जा रहा है। मप्र में अन्य प्रदेशों की तुलना में कम दर पर ड्रोन पायलट लाइसेंस की व्यवस्था भी की गई है।

अन्नदाता मजबूत होंगे, युवा समृद्ध

अन्नदाता के हाथ को मजबूत करने के साथ ही समय की बचत का मंत्र लिए यह आधुनिक ड्रोन आठ मिनट में एक एकड़ कृषि भूमि में कीटनाशक का छिड़काव करने में सक्षम हैं। पहले यह कार्य चार से पांच घंटे में होता था उसमें भी एक जैसा छिड़काव संभव नहीं हो पाता था। यह तकनीक युवाओं को भी आत्मनिर्भर बनाने के साथ ही आर्थिक रूप से समृद्ध भी बनाएगी। कृषि विभाग ने भी जबलपुर, सतना, रीवा, सागर समेत अन्य संभागों में ड्रोन को कृषि कार्य से जोड़ने के लिए पहल की है। सब्सिडी के जरिये ड्रोन खरीद के फायदे भी बताए जा रहे हैं। पहले चरण में 15 से अधिक प्रशिक्षित ड्रोन जिले में पहुंच गए हैं।

10 ड्रोन खरीदे, किसानों को नि:शुल्क दे रहे डेमो

जबलपुर के पिपरिया, खमरिया निवासी 25 वर्षीय निखिल साहू ने जबलपुर संभाग में प्रथम ड्रोन हाईटेक हब की स्थापना की है। पिपरिया स्थित श्रीराम इंटरप्राइजेज ने कीटनाशक के छिड़काव के लिए 10 एग्रीकल्चर ड्रोन लिए हैं। निखिल गांवों में पहुंचकर नि:शुल्क डेमो भी दे रहे हैं।

किसानों के लिए ड्रोन काफी फायदेमंद हैं। ड्रोन के प्रयोग से समय की बचत के साथ पैसों की बचत भी होती है। ड्रोन खरीदने में शासन से अनुदान भी मिलता है। किसानों को आगे आना चाहिए और योजना का लाभ लेना चाहिए।
वीके सोनवानी, कृषि यंत्री, जबलपुर संभाग

सिंगल चार्ज में दो घंटे से अधिक का बैकअप ड्रोन देता है। सुरक्षा को ध्यान में रखते हुए मानक स्तर की बैटरी का प्रयोग किया जाता है। कृषकों के लिए वास्तव में यह भविष्य में एक वरदान साबित होगा। फसलों में होने वाली बीमारियों की पहचान भी ड्रोन से संभव होगी।
एनएल मेहरा, सहायक कृषि यंत्री, जबलपुर

55-60 किलो तक बढ़ता है वजन

पशुपालक सही नस्ल की बकरी का करें पालन, बढ़ जाएगी आय

भोजन को नष्ट होने से बचाने एक विशेष प्रकार का खाद्य भंडार बनाएं

भोपाल। जागत गांव हमार

जखराना नस्ल अपने उच्च दूध उत्पादन और उत्कृष्ट मांस गुणवत्ता के लिए जानी जाती है, जो इसे किसानों के लिए एक लाभदायक विकल्प बनाती है। ये बकरियां विभिन्न पर्यावरणीय परिस्थितियों में खुद को अच्छी तरह से ढाल सकती हैं। यह नस्ल राजस्थान के जखराना और अलवर जिलों में पाई जाती है। इसका आकार बड़ा होता है और कानों पर सफेद धब्बे होते हैं। इसका उपयोग दूध उत्पादन और मांस उत्पादन दोनों उद्देश्यों के लिए किया जाता है और त्वचा का उपयोग टैनिन उद्योगों में किया जाता है। प्रतिदिन औसत दूध उपज 2.0-3.0 किलोग्राम है। एक वयस्क नर बकरी का वजन 55 से 60 किलोग्राम और एक वयस्क मादा बकरी का वजन 45 किलोग्राम होता है। एक वयस्क नर बकरी की लंबाई लगभग 84 सेमी. होती है और मादा बकरी की लंबाई लगभग 77 सेमी. होती है।

पशुओं को दें सही मात्रा में आहार- अपने जिज्ञासु स्वभाव के कारण बकरी की यह नस्ल विभिन्न प्रकार का भोजन खा सकती है, जो स्वाद में कड़वा, मीठा, नमकीन और खट्टा होता है। वे लोबिया, बरसीम, लहसुन आदि फलीदार भोजन स्वाद और आनंद से खाती हैं। वे मुख्य रूप से चारा खाना पसंद करते हैं जो उन्हें ऊर्जा और उच्च प्रोटीन देता है। आमतौर पर उनका खाना खराब हो जाता है क्योंकि वे खाने पर ही मलत्याग कर देती हैं। इसलिए भोजन को नष्ट होने से बचाने के लिए एक विशेष प्रकार का खाद्य भंडार बनाया जाता है।

गर्भवती बकरियों की ऐसे करें देखभाल

बकरियों के अच्छे स्वास्थ्य के लिए गर्भवती बकरी को ब्याने से 6-8 सप्ताह पहले दूध देना बंद कर दें। ब्याने से 15 दिन पहले ब्याने वाली बकरियों को साफ, खुले और रोगाणु रहित ब्याने वाले कमरे में रखें।

बीमारियों से बचाव के लिए टीका लगवाएं

क्लोस्ट्रीडियल रोग से बचाव के लिए बकरियों का सीडीटी या सीडी और टी टीकाकरण कराएं। जन्म के समय ही टिटनेस का टीका लगवाना चाहिए। जब बच्चा 5-6 सप्ताह का हो जाए तो उसकी रोग प्रतिरोधक क्षमता बढ़ाने के लिए उसे टीका लगवाना चाहिए और उसके बाद साल में एक बार टीका लगवाना चाहिए।

मेमने को कोलोस्ट्रम जरूर खिलाएं

जन्म के पहले घंटे के भीतर मेमने को कोलोस्ट्रम अवश्य खिलाएं। इससे उसकी रोगों से लड़ने की शक्ति बढ़ जाएगी। इसके अलावा, कोलोस्ट्रम विटामिन ए, डी, तांबा, लोहा, मैंगनीज और मैग्नीशियम आदि जैसे खनिजों का एक अच्छा स्रोत है। एक मेमने को प्रतिदिन 400 मिलीलीटर की आवश्यकता होती है। मेमने को दूध पिलाना चाहिए, जिससे पहले महीने की उम्र के साथ बढ़ता रहता है। एक साधारण बकरी एक दिन में 4.5 किलो हरा चारा खा सकती है। इस चारे में कम से कम 1 किलो सूखा चारा जैसे अरहर, मटर, चने की भूसी या फलियां घास भी शामिल होनी चाहिए।

अम्बाड़ा में जैविक औषधि बनाने का प्रशिक्षण दिया

पांढुर्ना। जागत गांव हमार

गांव रायबासा के युवा किसान रोशन पिता मधुकर पानसे द्वारा ग्रीन फाउंडेशन के बैनर तले गत दिनों ग्राम अम्बाड़ा में जैविक औषधि बनाने प्रशिक्षण किसानों को दिया गया। जिसमें राधे कृष्ण स्व सहायता समूह की अध्यक्ष उर्मिला पानसे , सचिव दीपा पराड़कर, भारतीय किसान संघ की ग्रामीण महिला अध्यक्ष रीमा पति उमेश चौधरी ,मोनिका देशमुख, सुरेखा हापसे, मीना ठोके, किसान प्रदीप पानसे एवं महेश मानमोडे तथा ग्रीन फाउंडेशन से कमलेश उपस्थित थे। रोशन ने उपस्थितों के समक्ष जीवामृत और छाछ में तांबा के टुकड़े डालकर कॉपर ऑक्सिक्लोराइड देसी दवाई बनाई गई। वहीं कपास के अवशेषों को जलाकर कोयला बनाया और उसमें गोबर खाद और गौमूत्र मिलाकर बनाए गए विशेष खाद का प्रत्यक्ष प्रदर्शन किया गया, ताकि जमीन उपजाऊ हो और उत्पादन अच्छा मिले।

प्रदर्शनकर्ता पानसे एवं अन्य किसानों ने ग्रीन फाउंडेशन के साथ ही राज्य और केंद्र सरकार से किराए पर ड्रोन उपलब्ध कराने एवं ड्रोन स्प्रे की ट्रेनिंग देने की मांग की गई ,ताकि हम जीवामृत, दशपर्णी, लाल टॉनिक, ट्राइकोडर्मा सुडोमोनास राइजोबियम ,नीम ऑयल का स्प्रे हमारी फसल पर कर सकें। इससे क्षेत्र के लोगों को रोजगार भी मिलेगा और कम लागत में अच्छा फसल उत्पादन भी होगा।

विनाशकारी कीट दीमक से जूझती दुनियां-जहान, किसान परेशान

डॉ. सत्येंद्र पाल सिंह
प्रधान वैज्ञानिक एवं प्रमुख
कृषि विज्ञान केंद्र, लहार (भिंड) म.प्र.

खेती किसानी से लेकर घर-दफ्तर हर जगह आज पूरी दुनियां-जहान दीमक की समस्या से जूझ रही है। बदलते हुए जलवायु परिवतज़्न के साथ ही दीमक का खतरा और तेजी से बढ़ रहा है। जैसे-जैसे तापमान में वृद्धि हो रही है और वषाज़् कम हो रही है आक्रामक विनाशकारी कीट दीमक का प्रकोप बढ़ रहा है। सूखा की स्थिति दीमक के प्रसार में काफी मददगार साबित हो रही है। हर वषज़् भारत में करोड़ों रुपए की हानि दीमक द्वारा किए गए नुकसान से हो रही है।

एक तरफ जहां फसलें दीमक के प्रकोप से चौपट हो रही हैं वहीं घर-दफ्तरों व आवासीय परिसरों में लकड़ी के फर्नीचर आदि भी दीमक की चपेट में आ रहे हैं। लेकिन दीमक के समाधान के लिए अभी तक कोई कारगर उपाय पूरी दुनिया में कहीं भी नहीं खोजा जा सका है।

पूरी दुनिया में बढ़ता तापमान ठंडे क्षेत्रों को भी दीमकों के अनुकूल बना रहा है। आंकड़ों पर गौर करें तो दीमको की वजह से दुनिया को हर साल 3,33,715 करोड रुपए लगभग 4000 करोड डालर से ज्यादा का नुकसान हो रहा है। अकेले भारत में खेती और फसलों मैं दीमक से होने वाला नुकसान कई करोड़ में है। गत दशकों पहले की तुलना में आज फसलों व खेतों में दीमक का प्रकोप बड़ी तेजी से बड़ा है। किसान इससे निदान के लिए रासायनिक कीटनाशकों का प्रयोग करते हैं, परंतु यह भी समस्या को पूरी तरह से हल करने में सफल नहीं है। दीमक को द्वारा लकड़ियों को ही निशाना बनाने की मुख्य वजह सैलूलोज होता है जो जीवन का मुख्य आहार है। सेल्यूलोज पेड़ पौधों लकड़ी घास आदमी प्रचार मात्रा में पाया जाता है दीमकों के मुंह की बनावट ऐसी होती है उनके लिए लकड़ी और इस तरह की चीजों को खाना आसान होता है। एक दीमक कॉलोनी 3 से 5 साल में परफेक्ट हो जाती है।

जनरल नियोबायोटा में प्रकाशित शोध में मिली जानकारी के अनुसार वैश्विक स्तर पर जिस तरह जलवायु में बदलाव आ रहे हैं और दुनिया गर्म हो रही है उसके कारण यह आक्रामक जीव उन शहरों में भी तेजी से फैल रहे हैं जहां पहले इनका नामोनिशान नहीं था। इन शहरों में साओ पाउलो, लागोस, मियामी, जकार्ता और डाविज़्न जैसे गर्म स्थानों के साथ-साथ लंदन, पेरिस, ब्रुसेल्स, न्यूयॉर्क और टोक्यो क्यों जैसे ठंडे समशीतोष्ण शहर भी शामिल हैं। आमतौर पर उष्णकटिबंधीय जलवायु में पनपने वाले या दीमक अपने प्राकृतिक आवास से दूर शहरों में बढ़ती कनेक्टिविटी और जलवायु में आ रहे बदलावों के कारण आसानी से पहुंच रहे हैं। बढ़ता शहरीकरण भविष्य में आक्रामक दीमकों के व्यापक प्रसार में और मददगार होगा।

आज दीमक नामक कीट किसानों के लिए सिरदर्द बना हुआ है। वहीं आम लोगों के लिए भी यह कोई कम समस्या नहीं हैं। किसी भी प्रकार की फसल हो या फिर कोई भी लकड़ी, दीमक उसका खात्मा पलों में कर देती है। किसान के लिए तो दीमक एक आफत बनकर उभर रही है। घर हो या दफ्तर या फिर किसानों की फसल, सूखी लकड़ी, दीवार हो या गिली लकड़ी, पौधे हो या फूलदार शाक हर जगह सफेद एवं पीले रंग का यह कीट अपनी पहुंच बनाकर धीरे-धीरे उन्हें तबाह कर देता है। प्रत्येक वर्ष लाखों रुपये की क्षति तो अकेला यह दीमक नामक कीट ही पहुंचा रहा है।

दीमक (Termites) एक सामाजिक कीट है। इसकी कई जातियाँ हैं जो इसोप्टेरा (Isoptera) नामक जीव वैज्ञानिक उपगण की सदस्य हैं। पहले यह समझा जाता था कि दीमक तिलचट्टों (कॉकरोच) से बिलकुल भिन्न हैं लेकिन वर्गानुवंशिक अध्ययन से पता चला है कि दीमक का क्रमविकास तिलचट्टों से

ही हुआ है। आदिम तिलचट्टों से संबंध के साक्ष्य से पता चलता है कि दीमक लेट पमिज़्यन (लगभग 251,000,000 साल पहले) में विकसित हुए थे, हालांकि ज्ञात जीवाश्म दीमक केवल अर्ली क्रेटेशियस (लगभग 130,000,000 साल पहले) के हैं। एक मादा दीमक एक दिन में लगभग 30,000 अंडे दे सकती है। दीमक के अंडे छोटे और सफेद रंग के होते हैं और इन्हें नंगी आंखों से देखा जा सकता है। बाद में, इन अंडों को लार्वा बनने से पहले कई हफ्तों तक सेते हैं। ये लार्वा हल्के, सफेद और छोटे बाह्यकंकाल वाले दिखाई देते हैं।

दीमक एक फौज के रूप में चलती है। दीमक जिस जगह पहुंच जाए वहां केवल मिट्टी ही मिट्टी दिखाई पड़ती है। दीमक जिस भी वस्तु को खाती है बस मिट्टी ही बनाकर दम लेती है। दीमक अक्सर नमी वाले क्षेत्रों से दूर भागती है और नर्म स्थान एवं सूखे क्षेत्रों में बेहद परेशान करती है। यही कारण है कि जहां अधिक होती है या फिर नहरों का पानी उपलब्ध है वहां दीमक नजदीक भी नहीं आती है। दीमक किसान की रबी एवं खरीफकी फसल में बेहद नुकसान पहुंचाती है। यह जड़ों को काट जाती है और जमीन में छुप जाती है। सबसे बड़ी बात तो यह है कि दीमक को मार पाना आसान काम नहीं है। इसकी सूंघने की क्षमता अत्यधिक होने के कारण दवा को दूर से सूंघकर जमीन में चली जाती है। जब दवा का असर कम होता है तो पुन: बाहर आ जाती है। दीमक उस समय अधिक निकलती है जब खेतों में फसल खड़ी होती है और यह फसलों को भारी नुकसान पहुंचाती है।

दीमक सेल्युलोज खाने वाले कीड़े हैं जो इन्फ्राऑर्डर आइसोप्टेरा के अंतर्गत आते हैं और चींटियों और मधुमक्खियों के समान एक जबरदस्त सामाजिक व्यवस्था का प्रदर्शन करते हैं। दीमक रानी अंतराल के आधार पर अंडे देती है। वे एक मिनट में 25 अंडे, एक दिन में 30,000 अंडे और एक वर्ष में 11 मिलियन से अधिक अंडे दे सकते हैं! श्रमिक और सैनिक दीमक आम तौर पर परिपक्वता तक पहुंचने के बाद केवल 1 या 2 साल ही जीवित रहते हैं । प्रजनन 4 वर्ष तक जीवित रह सकते हैं। रानी दीमक आम तौर पर एक दशक से अधिक समय तक जीवित रहती हैं, यदि परिस्थितियाँ अनुकूल हों तो कुछ प्रजातियाँ 20-25 साल तक जीवित रहती हैं। दीमक रानी एक पंखों वाली मादा दीमक होती है। वह कॉलोनी के अन्य सदस्यों की तुलना में बहुत बड़ी है, और उसका पेट अंडों से भरा हुआ है। उसके अंदर अंडों की संख्या के कारण उसकी त्वचा लंबी और पारभासी हो जाती है, जिसका आकार मानव तर्जनी के बराबर हो सकता है।

दीमक रासायनिक कीटनाशकों के उपयोग के समय बहुत कम संख्या में मरते हैं। इस दौरान वह जमीन के नीचे काफी अंदर तक चले जाते हैं और अपने आप को बचा लेते हैं। दीमक की कालोनियां भी जमीन के 10 से 20 मीटर अंदर तक पाई जाती हैं। जहां तक किसी दवा का असर पहुंचना नामुमकिन है। इस प्रकार से वह जमीन के अंदर सुरक्षित बने रहते हैं और अपनी वंश वृद्धि करते रहते हैं। जैसे ही फसल और अनुकूल समय आता है यह ऊपर आकर नुकसान पहुंचाने लगते हैं।

खेती में आज दीमक एक विकराल समस्या बन चुकी है। रासायनिक दवाओं के प्रयोग से दीमक का अस्थाई समाधान तो हो जाता है लेकिन स्थाई समाधान अभी तक नहीं खोजा जा सका है। किसान, वैज्ञानिक सरकारें सभी दीमक की समस्या से जूझ रही हैं। हालांकि रासायनिक कीटनाशकों के अलावा कई परंपरागत तकनीकियों से भी दीमक का समाधान तो नहीं लेकिन बचाव जरूर किया जा सकता है। आज समय की मांग है कि किसान परंपरागत तकनीकियों और अपने आसपास मिलने वाली चीजों से फसलों का दीमक से बचाव कर जहरीले कीटनाशकों के प्रभाव से बच सकते हैं।

पशुओं में प्रसूति ज्वर: लक्षण, उपचार एवं बचाव

» डॉ. मधु शिवहरे
» डॉ. नितिन बजाज ,
» डॉ. सोबरन सिंह माहौर
पशु चिकित्सा एवं पशुपालन महाविद्यालय , महू (म. प्र)

पशुओं में प्रसूति ज्वर जिसे दुग्ध अथवा मिल्क फीचर के नाम से भी जाना जाता है, एक उपापचय संबधित विकार है। यह रोग सामान्यत: गायों व भैसों में ब्याने के दो दिन पहले से लेकर तीन दिन बाद तक होता है, परन्तु कुछ पशुओं में यह रोग ब्याने के बाद 15 दिन तक भी हो सकता है। यह प्रमुख रूप से अधिक दूध देने वाली गायों व भैसों के रक्त में ब्याने के बाद कैल्शियम स्तर में एकाएक गिरावट के कारण होता है। इसलिए इस रोग के लक्षण, उपचार व इस रोग से बचाव की जनकारी किसान भाइयों के लिए महत्वपूर्ण हैं।

प्रसूति ज्वर के लक्षण

रोगी पशुओं में इस रोग के लक्षण 3 अवस्था में देखे सकते हैं।

प्रारंभिक अवस्था: 1. रोगी पशु अति संवेदनशील अशांत दिखाई देता है।

2. पशु दुर्बल हो सकता है व चलने में लड़खड़ाने लगता है।

3. पशु खाना-पीना व जुगाली करना बंद कर देता है।

4. मांसपेशियों में कमजोरी के अकंर शरीर में कंपन होने लगती है व पशु बार-बार सिर हिलाने व रंभाने लगता है।

प्रारंभिक अवस्था के लक्षण लगभग तीन घंटे तक दिखाई देते हैं तथा इस अवस्था के रोग की पहचान केवल अनुभवी किसान या पशु चिकित्सक ही कर पाते हैं। यदि इस अवस्था में पशु का उचित उपचार नहीं किया जाए तो पशु रोग की दूसरों अवस्था में पहुँच जाता है, जिसके लक्षण निम्न है:

1. रोग के लक्षण दिखाई देते ही तुरंत रोगी पशु को कैल्शियम बोरेग्लुकोनेट दवा की 450 मि,ली, की एक बोतल रक्त की नाडी के रास्ते चढ़ा देनी चाहिए। यह दवा धीरे-धीरे 10-20 बूंदें प्रति मिनट की दर लगभग 20 मिनट में चढ़ानी चाहिए। यदि पशु दवा की खुराक देने किए 8-12 घंटे के भीतर उठकर स्वयं खड़ा नहीं होता है इसी दवा की एक और खुराक देनी चाहिए।

2. इस रोग में प्राय: पशु के शरीर में मैग्नीशियम की भी कमी हो जाती अहि इसलिए कैल्शियम-मैग्नीशियम बोरेग्लुकोरेट में मिश्रण की दवा देने से अधिक लाभ होता है। यह दोनों दवाएं बाजार में कई नामों से उपलब्ध है।

3. सामान्यत: लगभग 75ल रोगी पशु उपचार के 2 घंटे के अंदर ठीक होकर खड़े हो जाते हैं। उनमें से भी लगभग 25ल पशुओं को यह समस्या दोबारा हो सकती है। अत: एक बार फिर इसी उपचार की आवश्कता पड़ सकती है।

4. उपचार के 24 घटें तक रोगी पशु का दूध निकालना चाहिए।

प्रसूति ज्वर से बचाव के उपाय

1. इस रोग से बचाव के लिए पशु को ब्यांतकाल में संतुलित आहार दें। संतुलित आहार के लिए दाना-मिश्रण, हरा चारा बी सुखा चारा उचित अनुपात में दें। ध्यान रहे कि दाना मिश्रण में 2ल उच्च गुणवत्ता का खनिज लवण व 1ल साधारण नमक अवश्य शामिल हो।

2. यदि दाना मिश्रण में खनिज लवण व साधारण नमक नहीं मिलाया गया है तो पशु को 50 ग्राम खनिज लवण व् 25 ग्राम साधारण नमक प्रतिदिन अवश्य दें। परन्तु ब्याने से 1 महीने पहले खनिज मिश्रण की मात्रा 59 ग्राम प्रतिदिन से घटा कर 39 ग्राम प्रतिदिन कर दें। ऐसा करने से ब्याने के बाद कैल्शियम की बढ़ी हुई आवश्यक को पूरा करने के लिए हड्डियों से कैल्शियम अवशोषित करने की प्रक्रिया ब्याने से पहले ही अम्ल में आ जाती है, जिससे ब्याने के बाद पशु के रक्त में कैल्शियम का स्तर सामान्य बना रहता है। अत: पशु इस रोग से बच जाता है।

3. ब्याने के समय के आसपास पशु पर 3-4 दिन तक नजर रखें। रोग के लक्षण दिखाई देते ही तुरंत उपचार करवाएं।

गर्मी में लू और निर्जलीकण से बचाव

» डॉ. मनीषा चौधरी
कृषि विज्ञान केंद्र
रायगढ़, छत्तीसगढ़

मई-जून के महीनें में हमारे यहॉ बहुत गर्मी पड़ती है। इन महीनों में काफी लोग लू और गर्मी के शिकार हो जाते और कई बार लू और गर्मी के कारण जान भी चली जाती है। सूरज की तेज किरणों के कारण, मस्तिष्क का गर्मी पर काबू पाने वाला केन्द्र काम करना बंद कर देता है, जिससे शरीर में गर्मी बढ़ जाती हैं ऐसी स्थिति को लू लगना कहते हैं।

लू लगने के लक्षण: लू लगने पर शरीर से पसीना निकलना बंद हो जाता हैं या पसीना बहुत कम निकलता है। त्वचा गर्म और शुष्क हो जाती है। तेज बुखार होता है कई बार तापमान 1050 फेरनहाइट या इससे अधिक हो जाता है।

लू से बचाव: दोपहर की धूप में अधिक काम नहीं करना चाहिए। यदि तेज धूप में जाना पड़े तो सिर पर टोपी पहनें या पगड़ी साफे अथवा दुपट्टे से सर को ढकें। लू से बचाव के लिए आप, अंगूर, पपीता, नीबू, तरबूज, गन्ने का रस, शहतूत व कच्चा नारियल ज्यादा मात्रा में खायें। नमक व जीरा मिली लस्सी या नीबू की शिकंजी दिन में 3-4 बार पीएं। पोदीने का अधिक प्रयोग करें। दिन में 10-12 गिलास पानी पिएं।

लू का उपचार: यदि लू लग जाये तो सबसे पहले रोगी के शरीर का तापमान कम करने का प्रयास करें।

निर्जलीकरण: बच्चों को गर्मियों में अधिक उल्टियां और दस्त लगने पर उनके शरीर से काफी पानी निकल जाता है। जिससे शरीर में पानी की कमी हो जाती है। इस अवस्था को निर्जलीकरण कहते हैं।

निर्जलीकरण के लक्षण: निर्जलीकरण में पेशाब या तो आता ही नहीं और यदि आता है तो गहरे पीले रंग का होता है।

निर्जलीकरण से बचाव: निर्जलीकरण से बचाव के लिए बच्चे को साफसुथरा संतुलित भोजन दें। पर्याप्त मात्रा में पानी पिलाएं। अधिक गर्मी में बच्चों को बाहर न निकलने दें।

निर्जलीकरण का उपचार: निर्जलीकरण की स्थिति में बच्चे को अधिक से अधिक तरल पदार्थ, पिलाएं जैसे चावल का पानी, शिंकंजी, नारियल का पानी, नमकीन लस्सी, दाल का पानी और हल्की चाय ।

जीवन रक्षक घोल: 1 ली. उबाल कर ठंडा हुए पानी में एक मुटूठी चीनी और तीन अंगुलियों की चुटकी से नमक डालकर मिलाएं। घोल को 24 घंटे के अंदर इस्तेमाल करें और इसे कभी भी दुबारा गर्म न करें।

न्यूमोनिया में दी जाने वाली दवाएँ: एण्टीबायोटिक, जैसे - टेट्रासाइक्लिन, स्टेप्टोनीसीलीन, एम्पीसीलीन, एमोक्सीसिलीन एवं क्लोक्सासीलीन वाली दवा। एण्टीहीसटामीनीक एवं दर्द निवारक दवा डॉक्टर की सलाह पर देना चाहिए। ब्रोन्कोडाइलेटर एवं एक्सपेक्टोरेण्ट इत्यादि दवा केवल डॉक्टर के परामर्श पर देना चाहिए।

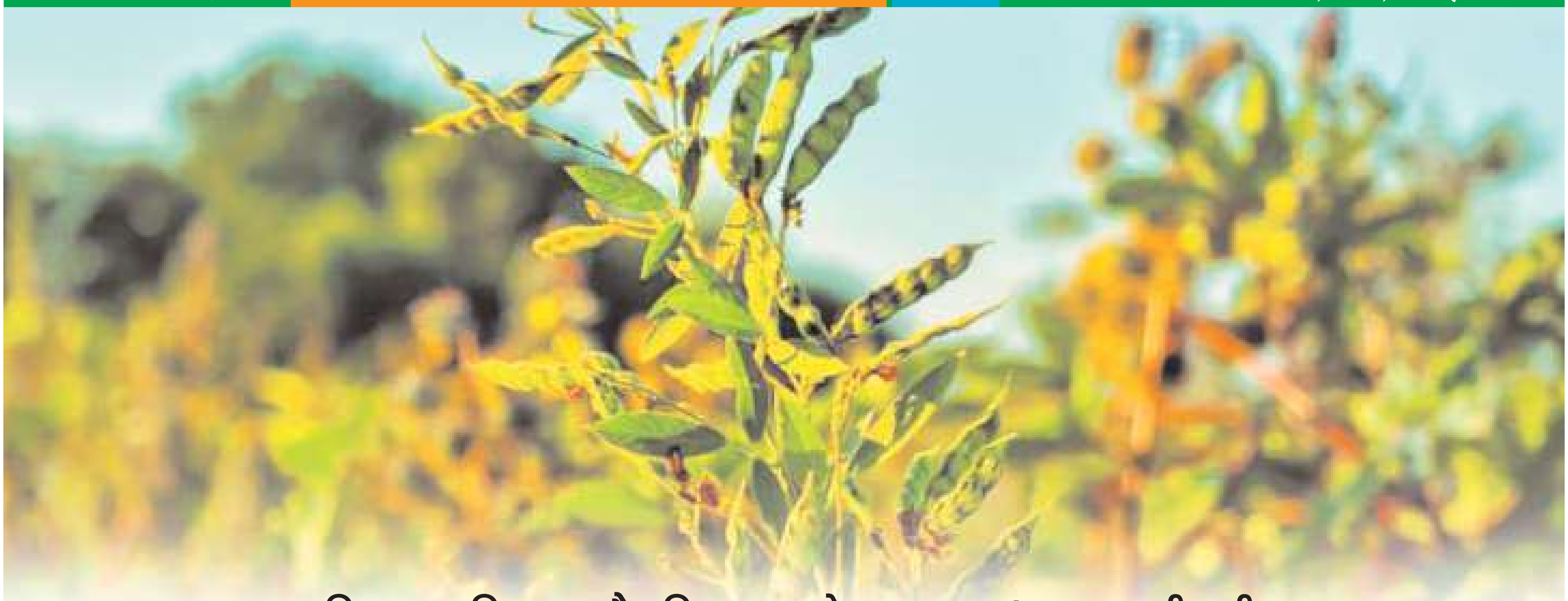

कवि कुमार विश्वास और फिल्म डायरेक्टर रामानंद सागर भी मुरीद

एमपी के जंगली अरहर की खेती एक बार लगाकर पांच साल उपज

प्रोटीन रिच और दुबई तक जाती है अरहर की दाल

सागर। जागत गांव हमार

इस बार जागत गांव हमार अपने इस अंक में अपने पाठकों को बता रहा है कि सागर जिले के ग्राम कपूरिया की उपलब्धि। जिला मुख्यालय से 8 किलोमीटर दूर इस गांव की पहचान जैविक खेती के नाम से है। यहां युवा किसान आकाश चौरसिया जंगली अरहर की खेती कर रहे हैं। आकाश बताते हैं, 10 साल पहले यूपी और बिहार सीमा पर बक्सर जिले के जंगल में पौधा मिला था। जिसकी फली काफी बड़ी थी। कुछ फली तोड़कर साथ लाया। खेत में लगाई। तब पता चला कि यह फली जंगली अरहर की है, जिसके बाद बीज तैयार किया। वर्तमान में एक एकड़ जमीन पर जंगली अरहर की खेती कर रहा हूं। इसमें करीब 10 हजार का खर्च आया। उत्पादन एक में करीब 10 क्विंटल होता है। जंगली अरहर की दाल बाजार में 150 रुपए किलो बिकती है। ऐसे में एक बार में डेढ़ लाख रुपए कमा सकते हैं।

आकाश ने बताया कि जंगली अरहर की दाल में बड़ी मात्रा में प्रोटीन होती है। इसमें फाइबर तत्व भी ज्यादा होते हैं। इसे खाने से पेट में गैस नहीं बनती। इसे कम मात्रा में बनाने पर ज्यादा होती है। जंगली अरहर की खेती कर बीज बनाया है। इसे तीन लाख से अधिक किसानों को दे चुका हूं। वहीं, बाजार में इस दाल की डिमांड बहुत है। इसे दुबई तक भेजता हूं। कवि कुमार विश्वास और निर्देशक और निर्माता रामानंद सागर के परिवार के यहां भी मेरे यहां से ही दाल जाती है।

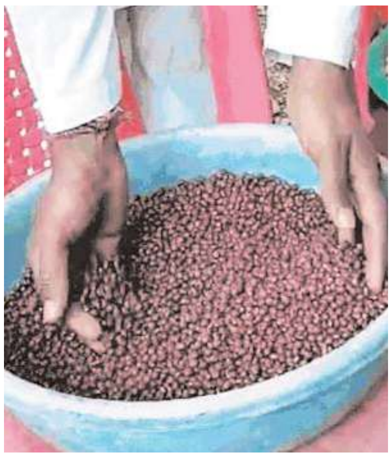

इस तरह करें भूमि का उपचार

आकाश बताते हैं कि खेत में फसल बोवनी के पहले मिट्टी को उपचारित करना चाहिए। इससे जमीन के अंदर पहले से मौजूद हानिकारक प्रभाव नष्ट हो जाते हैं। मिट्टी सामान्य हो जाती है। इसके लिए अगर मिट्टी का पीएच 6.5 से 7.5 के बीच है, तो 100 किलोग्राम चूना पाउडर, 50 किलोग्राम नीम का पाउडर दोनों को मिलाकर खेत में फैला देना चाहिए। इसके बाद जुताई की जाती है, ताकि यह मिट्टी में मिल जाए। मिट्टी में मिलाने के बाद 10 से 15 दिन बाद फसल बोना अच्छा होता है।

खेती के लिए जैविक खाद व मात्रा

जैविक तरीके से अरहर की खेती करने पर मिट्टी को भी संतुलित आहार की जरूरत होती है। इसकी पूर्ति कुछ स्वयं से निर्मित जैविक खाद से पूरी की जा सकती है। पहले 4 टन प्रति एकड़ गोबर की या कचरे की खाद, 2 टन प्रति एकड़ वर्मीकंपोस्ट या मुर्गी की खाद और 500 किलोग्राम कचरा और नमक से बनी खाद में गौकृपा-अमृतम जैविक कल्चर मिलाकर नमी युक्त खेत में फैला देना चाहिए। फैलाने के बाद मिट्टी में अच्छी तरह से मिक्स कर देना चाहिए। ध्यान रहे कि जब खेत में खाद डालें, तब खेत में नमी होना चाहिए। अगर खेत में इनको मिक्स नहीं कर पाते, तो इसे पौधे व बीज लगाते समय बेड पर बिखेर कर मिला देना चाहिए। रोपण के बाद हर 20 दिन के अंतर से मटका खाद देना चाहिए, जिसे 20 किलोग्राम देसी गाय के ताजे गोबर, 20 लीटर देसी गाय का मूत्र, 2 किलोग्राम उड़द की दाल का आटा, 2 किलोग्राम गुड और 2 किलोग्राम सरसों की खली को मिलाकर एक बर्तन में 5 दिन रखने के बाद क्लॉक और एंटीक्लॉक घुमाने के बाद अधिक पानी में मिलाकर पौधों की जड़ों में देना चाहिए।

नीम और जैविक खाद से रोकें खरपतवार व रोग

बारिश में फसल के साथ खरपतवार भी होती है। इसके लिए खेत के आसपास या फसल के अवशेष जैसे हल्दी, अदरक, अरबी, तिल, मक्का, ज्वार, बाजरा, धान का पहरा (पराली) आदि का पौधा लगाने के तुरंत बाद पौधे के चारों तरफ जमीन को ढंक देते हैं, जिससे अन्य खरपतवार नहीं उग पाते। ऐसे में बिना खर्च फसल को खरपतवार से सुरक्षित कर पाते हैं। वहीं, अरहर की यह किस्म परंपरागत जंगली प्रजाति है। इस प्रजाति में रोग-प्रतिरोधक क्षमता बहुत ज्यादा होती है। सामान्य स्थिति में इसमें रोग व बीमारियां कम आती हैं, लेकिन मौसम में बदलाव व प्रबंधन में कमी होने पर रोकथाम के उपाय करने होंगे।

एक किलो बीज एक एकड़ में लगाएं

बीज की मात्रा व उपचार अरहर की इस किस्म को दो तरीके से लगाया जा सकता है। पहला- नर्सरी तैयार करके इसके लिए 50 किलोग्राम मिट्टी, 50 किलोग्राम गोबर की पची हुई खाद या केंचुआ खाद, इनमें 1 किलोग्राम चूना पाउडर और 1 किलोग्राम नीम का पाउडर सभी को आपस में मिलाकर 2.5×6 इंच के पॉली बैग में भर कर 1 से 1.5 इंच की गहराई में बीज डाले। इस विधि में 1 एकड़ में 750 ग्राम बीज की आवश्यकता होती है। दूसरा तरीका सीधा बीज खेत में लगाना, जब बीज सीधा खेत में बोते हैं, तो 2 दाने एक साथ लगाना चाहिए। इसकी गहराई 1 से 1.5 इंच रखनी चाहिए। इस स्थिति में प्रति एकड़ में 1 किलोग्राम बीज की आवश्यकता होती है।

कब करें खेती और कितना उत्पादन होगा

यह 6 से 7 महीने की फसल है। इसकी पहली कटाई पर फली हुई डालियां काटी जाती हैं। बाकी पेड़ छोड़ दिया जाता है। पहली कटाई 15 दिसंबर से 15 जनवरी के बीच होती है। दूसरी- 15 अप्रैल से 15 मई के बीच की जाती है। इस समय पौधे को जमीन से 3 से 3.5 फीट उंचाई छोड़कर बाकी काटते हैं। यह प्रकिया प्रति वर्ष करनी होती है। अरहर की इस प्रजाति से दोनों कटिंग पर 8 से 10 क्विंटल उत्पादन लिया जा सकता है। इसकी फली लंबी और लाल होती है।

32 खरीदी केन्द्रों पर अभी तक खरीदा गया 5 लाख 9220 क्विंटल गेहूं

मंडी में गेहूं की रिकॉर्ड खरीदी, सरकारी खरीदी केंद्रों पर लक्ष्य पूर्ति के पड़े लाले

मंडी में 11 मई तक खरीदा जा चुका 8.10 लाख क्विंटल से ज्यादा गेहूं

श्योपुर । जागत गांव हमार

जिले में समर्थन मूल्य पर 32 खरीद केन्द्रों पर गेहूं की खरीदी चल रही है। इस दौरान कुछ खरीद केन्द्रों पर एक-दुक्का किसान पहुंच रहे है तो कई खरीदी केन्द्रों पर गेहूं विक्रय करने के लिए किसानों की भीड नजर आ रही है। अब तक जिले के खरीद केन्द्रों पर 5 लाख 9 हजार 220 क्विंटल गेहूं खरीदा जा सका है। लेकिन श्योपुर मंडी में 8 लाख 10 हजार क्विंटल गेहूं खरीदा जा चुका है, जो पिछले साल से ज्यादा है। हालांकि समर्थन मूज्य पर गेहूं की खरीदी 20 मई तक चलेगी। लेकिन इसके बाद भी गेहूं खरीदा के लक्ष्य की पूर्ति होती संभव नहीं दिख रही है।

यूं तो समर्थन मूल्य पर गेहूं की खरीदी के लिए जिले में 32 खरीदी केन्द्र एक अप्रैल को ही खुल गए थे। लेकिन मंडी में गेहूं के दाम अच्छे मिलने की वजह से सरकारी खरीदी केन्द्रों की तरफ किसानों का रुझान कम ही रहा। किसानों का रूझान कम होने की वजह से इस बार जिले में गेहूं खरीदी के लक्ष्य की पूर्ति होना संभव नहीं दिख रही है। बता दें कि जिले को इस बार एक लाख मेट्रिन टन गेहूं खरीदने का टारगेट मिला है। इस टारगेट के मुकाबले 11 मई तक श्योपुर जिले में 50 हजार 922 मेट्रिन टन यानि 5 लाख 9 हजार 220 क्विंटल गेहूं की खरीदी ही हो पाई है। यह भी तब संभव हुआ,जब जिले के 4 हजार 277 किसान अपने गेहूं को बेचने के लिए खरीदी केन्द्रों पर पहुंचे। उधर, मंडी में गेहूं का भाव अच्छा चलने से गेहूं बेचने के लिए किसानों की भीड उमड रही है। जिसके चलते श्योपुर मंडी में 11 मई तक 8 लाख 10 हजार 501 क्विंटल गेहूं खरीदा गया है।

खरीदी केन्द्र पर गेहूं बेचने वाले किसानों को हुआ 78.54 करोड़ का भुगतान- जिले में समर्थन मूल्य पर चल रही गेहूं की खरीदी के दौरान जिन किसानों के द्वारा गेहूं विक्रय किया जा रहा है,उन्हें गेहूं का भुगतान भी किया जा रहा है। प्रभारी जिला आपूर्ति अधिकारी सुनील शर्मा की माने तो जिले के खरीद केन्द्रों पर अब तक 4 हजार 277 किसानों से 5 लाख 9 हजार 220 क्विंटल गेहूं खरीदा गया है। गेहूं विक्रय करने वाले किसानों को अब तक 78.54 करोड रुपए का भुगतान भी हो चुका है।

तारीख बढ़ाई, फिर भी संभव नहीं टारगेट पाना

भले ही शासन स्तर से समर्थन मूल्य पर गेंहू खरीदी की तारीख बढाकर 15 मई से 20 मई कर दी गई हो,लेकिन इसके बाद भी जिले में गेंहू खरीदी के लक्ष्य की पूर्ति संभव नहीं दिख रही है। 20 मई को आने में अब सिर्फ 8 दिन के आसपास रहे गए है और श्योपुर जिले को गेहू खरीदी का लक्ष्य एक लाख मेट्रिक टन का मिला है। जबकि मंडी में गेहूं का भाव अच्छा है,इसलिए किसानों की भीड गेहूं विक्रय करने के लिए खरीद केन्द्रों पर उमडने की संभावना नहीं दिख रही है। ऐसे में 8 दिन के भीतर खरीदी का लक्ष्य पूर हो जाएगा,ऐसी संभावना फिलहाल दूर दूर तक नहीं दिख रही है।

श्योपुर मंडी में इस साल गेहूं की रिकॉर्ड खरीदी

जैदा स्थित कृषि उपज मंडी श्योपुर में पिछले साल के मुकाबले इस साल गेहूं की रिकॉर्ड खरीदी की जा चुका है। श्योपुर मंडी सचिव एसडी गुप्ता ने बताया कि पिछले साल श्योपुर मंडी में 11 मई तक 4 लाख 67 हजार 707 क्विंटल गेहूं खरीदा गया था। लेकिन इस बार 11 मई तक की स्थिति में 8 लाख 10 हजार 501 क्विंटल गेहूं खरीदा जा चुका है। जो कि पिछले साल के मुकाबले दो गुना के करीब है। फिलहाल मंडी में गेहूं की आवक बनी हुई है। इसलिए गेहूं की खरीदी का आंकडा और बढने की उम्मीद है।

समर्थन मूल्य खरीदी 20 मई तक की जाएगी। अब तक खरीद केन्द्रों पर 50 हजार मेट्रिन टन से ज्यादा गेंहू खरीदा चुका है। 78.54 करोड़ रुपए का किसानों को भुगतान भी हो चुका है।
सुनील शर्मा, प्रभारी जिला आपूर्ति अधिकारी,श्योपुर

इस साल मंडी में पिछले से ज्यादा गेंहू की खरीदी हो गई है। 11 मई तक पिछले साल 4 लाख 67 हजार 707 क्विंटल गेहूं की खरीदी हुई थी, जबकि इस साल 11 मई तक 8 लाख 10 हजार 501 क्विंटल गेहूं मंडी में खरीदा जा चुका है।
एसडी गुप्ता, सचिव कृषि उपज मंडी श्योपुर

पासबुक की स्पष्ट फोटोकॉपी लाएं और पंजीयन कराएं किसान

बालाघाट में बनी प्रदेश की पहली डिजिटल उपज मंडी

- » धोखाधड़ी, लंबी कतार से मुक्ति व सुरक्षित भुगतान होगा।
- » व्यापारियों व किसानों को कई परेशानियों से छुटकारा मिलेगा
- » गोंगलई कृषि उपज मंडी में कुल छह विशालकाय शेड।
- » अनाज संधारण की क्षमता करीब एक हजार क्विंटल है।
- » वर्ष 2003 से गोंगलई में संचालित है कृषि उपज मंडी।
- » 2003 से पहले इतवारी गंज में संचालित होती थी मंडी।

बालाघाट । जागत गांव हमार

बालाघाट की गोंगलई स्थित कृषि उपज मंडी समिति प्रदेश की पहली डिजिटल और जिले की पहली ई-मंडी के रूप में चयनित हुई है। जिले में स्थित सात मंडी समितियों में गोंगलई की कृषि उपज मंडी नाबार्ड बैंक के पायलट प्रोजेक्ट के अंतर्गत प्रदेश की पहली डिजिटल मंडी एवं मंडी बोर्ड, भोपाल के पायलट प्रोजेक्ट के अंतर्गत जिले की पहली ई-मंडी बनी है। इसके तहत मंडी समिति में कैशलेस अर्थव्यवस्था एवं पारदर्शिता को बढ़ावा देते हुए सभी वित्तीय संव्यवहारों का सुरक्षित व सुविधाजनक डिजिटली लेनदेन होगा।

लंबी कतारों से मिलेगी मुक्ति - मंडी समिति में कृषकों, हम्मालों, तुलावटियों एवं अन्य कृत्यकारियों को चोरी, लूटपाट, धोखाधड़ी एवं लंबी कतारों से मुक्ति व सुरक्षित भुगतान होगा। मंडी सचिव मनीष मड़ावी ने बताया कि ई-मंडी से मंडी के व्यापारियों एवं हितग्राहियों के समय और श्रम की बचत होगी। अब किसान ई-मंडी एप के माध्यम से उपार्जन की प्रक्रिया में शामिल हो सकेंगे। इससे व्यापारियों व किसानों को कई परेशानियों से छुटकारा मिलेगा, जो काम अब तक मैन्युअल होते थे, वो अब डिजिटली होंगे।

ई-मंडी एप में कृषक पंजीयन कराएं

2024-25 में ग्रीष्मकालीन रबी की धान और अन्य रबी फसल विक्रय करने वाले कृषकों से मंडी समिति के भारसाधक अधिकारी व एसडीएम बालाघाट गोपाल सोनी एवं मंडी सचिव मनीष मडावी ने अपील करते हुए बताया कि अपनी उपज बेचने के लिए किसान बैंक पासबुक की स्पष्ट फोटोकॉपी साथ लाएं। अपने एंड्राइड मोबाइल में गूगल प्लेस्टोर से मंडी बोर्ड भोपाल का ई-मंडी एप इंस्टाल करें। ई-मंडी एप में कृषक पंजीयन कराएं। इस के लिए एप में अपना आवश्यक विवरण भरें।

मोबाइल नंबर दर्ज करवाना अनिवार्य

ई-मंडी एप में किसान लॉग इन में जाकर बालाघाट मंडी का चयन कर अपनी फसल विवरण दर्ज कर प्रवेश पर्ची स्वयं अपने मोबाइल में ही प्राप्त करें। मंडी समिति के मंडी गेट पर भी ई-मंडी प्रवेश पर्ची की सुविधा उपलब्ध है। किसान यहां से भी प्रवेश पर्ची प्राप्त कर सकते हैं। किसानों को जिस नाम से भुगतान चाहिए, वह नाम, मोबाइल नंबर और फसल बताकर ई-मंडी प्रवेश पर्ची बनाएं। कृषक बंधुओं के लिए ई-मंडी प्रवेश पर्ची बनाते समय मोबाइल नंबर दर्ज करवाना अनिवार्य है।

पांच रुपए में भोजन

समय पर सुरक्षित और सुविधाजनक भुगतान प्राप्त करने के लिए मंडी गेट पर बैंक पासबुक और आधार कार्ड की स्पष्ट छायाप्रति जमा करें। मंडी समिति में अपनी उपज बेचने आने वाले किसानों के लिए स्वच्छ पेयजल, पांच रुपए में भोजन, तौल व्यवस्था एवं प्राथमिक चिकित्सा की सुविधाएं उपलब्ध है।

ऐसी खेती कीजिए, लगे न कोई खर्चा, घर में जैविक अन्न हो, होए देश में चर्चा

ग्राम सुधार समिति सतना द्वारा दो दिवसीय आवासीय प्रशिक्षण

सतना। जागत गांव हमार

ग्राम सुधार समिति सतना के द्वारा दो दिवसीय आवासीय प्रशिक्षण कार्यक्रम गत दिवस परस्मनिया पठार की ग्राम पंचायत आलमपुर में गोंडवाना समुदायिक भवन में आयोजित किया गया। ग्राम सुधार समिति के कार्यक्रम अधिकारी जगदीश रानी सिंह ने बताया कि ग्राम सुधार समिति के द्वारा सतत अजीविका विकास कार्यक्रम के माध्यम से सतना जिले के मजगवां एवं उचेहरा विकासखंड के 90 गांव में प्राकृतिक खेती को बढ़ावा देने, मोटे अनाजों के पुनर्जीवन, पंचायती राज व्यवस्था को मजबूत करने, लघु वन उपज के सतत दोहन और लघु वन उपज से सतत आजीविका का निर्माण एवं विभिन्न शासकीय योजनाओं के जमीनी स्तर पर क्रियान्वन के माध्यम से समग्र ग्रामीण विकास के लिए कार्य किया जा रहा है। इसी कार्यक्रम के अंतर्गत दो दिवसीय आवासीय प्रशिक्षण का आयोजन आलमपुर में किया गया था।

गतिविधि आधारित प्रशिक्षण प्रणाली अपनाई- कार्यक्रम की रूपरेखा अनुसार व्याख्यान को सीमित रखकर गतिविधि आधारित 3 घंटे सघन प्रशिक्षण कार्यक्रम गहराता हुआ जल संकट, पारंपरिक स्थानों के स्थान चिन्हित कर पंचायत के माध्यम से तालाब, कंटूर ट्रेंच, और मेंढ़ बंधान के प्रस्ताव दिलवाने और जल संकट को देखते हुए श्रीअन्न के फसल चक्र में अपने बीज बैंकों से समय पर बीज लेने एवं प्राकृतिक खेती की प्रणाली पर प्रशिक्षण दिया गया।

किसानों ने भी रखे अपने विचार- प्रोजेक्ट एरिया में समुदाय के सबसे सम्मानित एवं वरिष्ठ जन जगतधारी सिंह जी के द्वारा कृषि से जुड़े अपने पारंपरिक अनुभवों को व्यक्त किया गया एवं ग्राम सुधार समिति के कार्यों के लिए किसानों को प्रेरित किया गया। अन्य किसानों के द्वारा भी अपने विचार रखे गए। पदाधिकारियों के द्वारा महत्वपूर्ण बिंदुओं को लगातार नोट भी किया गया।

ग्राम सुधार समिति के द्वारा प्राकृतिक खेती के लिए तैयार की गई पीओपी

पिछले 2000 वर्षों में खेती के बदलते स्वरूप, खेती की विभिन्न प्रणालियों और उसके बदलते आथिज़्क महत्व पर व्याख्यान से स्पष्टता बनाते हुए, अलग-अलग सीआरपी साथियों के द्वारा पीओपी पर प्रशिक्षण शुरू किया गया। जगदीश रानी सिंह ने बताया कि ग्राम सुधार समिति के द्वारा बीज की बोवनी से कटाई तक पीओपी के विभिन्न चरण बनाए गए हैं जैसे की खेत की तैयारी, बीज का चयन, बीज का शोधन, बुवाई, निंदाई, पोषक तत्व प्रबंधन, नामी प्रबंधन, रोग एवं कीट प्रबंधन और कटाई की उपरांत रखरखाव और इन विभिन्न चरणों पर अलग-अलग गतिविधियां अपनाई जाती हैं, जिन पर सभी किसानों को प्रशिक्षण दिया गया है। प्रशिक्षण में विभिन्न चरणों पर सतना जिले में ही कायज़ करते हुए बनाई गई फिल्मों का प्रयोग भी किया। ढलती शाम के साथ मजगवां विकासखंड में कार्यरत वरुण त्रिपाठी के द्वारा भी बच्चों के साथ कुछ विशिष्ट गतिविधि संपन्न की गईं, और उनका उत्साहवर्धन किया गया।

वैश्विक समस्याओं के स्थानीय समाधान ही धरती में बचाएंगे मानव का अस्तित्व

जगदीश रानी सिंह ने बताया कि रात्रि लगभग 7 से 8 बजे के बीच ग्राम सुधार समिति की पुरानी कहानियां को प्रदशिज़्त किया गया एवं प्रोजेक्टर के माध्यम से रात्रि में लगभग ढाई घंटे की पिक्चर रात 10 बजे तक वैश्विक समस्याओं के स्थानीय उपायों को खोजने के लिए जलवायु परिवतज़्न, मरुस्थलीकरण, और दुनिया भर में गहराते जल संकट पर फिल्म दिखाई गईं।

डीडीए आत्मा ने आलमपुर स्वदेशी बीज बैंक और जैव संसाधन केंद्र को बताया उत्कृष्ट

तत्पश्चात आए हुए सभी अतिथियों को ग्राम सुधार समिति के द्वारा आलमपुर पंचायत में बनाए गए स्वदेशी बीज बैंक और जैव संसाधन केंद्र जो कि आलमपुर पंचायत में ग्राम सुधार समिति कार्यकर्ता संतोष सिंह मलगाम की सहायता से प्रथमान सिंह के द्वारा संचालित किया जा रहा है। कार्यक्रम अधिकारी जगदीश रानी सिंह ने बताया कि ग्राम सुधार समिति के द्वारा परस्मनिया पठार की 9 पंचायत में इस प्रकार के स्वदेशी बीज बैंक और जैव संसाधन केंद्र बनाए गए हैं।

पंचायती राज, मनरेगा के माध्यम से गांव में विकास की अपार संभावनाएं

डॉ. जेआर नारायण के द्वारा पंचायती राज की कार्यप्रणाली को विस्तार में समझाते हुए किसानों को जागरूक किया गया। अंत में मंजू चटर्जी द्वारा लघु वन उपज के सतत संग्रह एवं प्रसंस्करण के माध्यम से आजीविका विकास बात रखी गई।

अंत में ग्राम सुधार समिति के टीम लीडर सार्थक अरुण त्यागी के मार्गदर्शन में निरंतर बेहतर कार्य करने का संकल्प व्यक्त किया। कार्यक्रम में 45 गांव के प्रतिनिधि किसानों के साथ डीडीए आत्मा राजेश त्रिपाठी, वरिष्ठ समाजसेवी डॉक्टर जेआर नारायण, वरिष्ठ पत्रकार अमित सिंह बाबा, जगदीश रानी सिंह, वरुण त्रिपाठी, रवि शंकर वर्मा, राकेश मिश्रा, मंजू चटर्जी, संतोष सिंह मलगाम, लल्लू सिंह, भास्कर देव परिहार, लक्ष्मण सिंह मरकाम, मोती सिंह, लाल बहादुर सिंह लोधी, उमिज़्ला दहायत, दुर्गेश सिंह, अमृतलाल दहायत, जगतधारी सिंह, कमलेश सिंह कुशराम एवं अजय सिंह कुशराम और सभी पंचायतों के बीआरसी संचालक उपस्थित रहे।

देर रात समुदाय के सदस्यों के द्वारा राई, फाग और भगत से बंधी अद्भुत समां

दिन भर के कार्यक्रम से उत्साहित होकर आलमपुर मेला समिति के अध्यक्ष आदरणीय श्री कमलेश सिंह कुशराम जी, आलमपूर बीआरसी के संचालक प्रथमान सिंह, युवा सामाजिक कार्यकर्ता अजय सिंह कुशराम, एफआईजी के अध्यक्ष कौशल सिंह मरकाम, दरोगा सिंह एवं आलमपुर पंचायत में ग्राम सुधार समिति के कार्यकर्ता संतोष सिंह मलगाम, सभी साथियों के द्वारा समुदाय की ओर से विभिन्न सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आयोजन किया गया। समुदाय के द्वारा प्रदर्शित सांस्कृतिक कार्यक्रम में भगत से आरंभ होकर, राई और फाग में ही लगभग 2 बजे तक चला। ग्राम सुधार समिति के कार्यकताओं एवं समुदाय के साथियों का के बीच अद्भुत समन्यवय देखने को मिला। इस प्रकार पहले पहले दिन लगभग 10:00 बजे से शुरू होने वाली गतिविधियों का अंत दूसरे दिन रात्रि 2:00 बजे हुआ। प्रशिक्षण कार्यक्रम के द्वितीय दिवस में आलमपुर के विशेष किसान साथी और परस्मनिया पठार में समुदाय में गोड़ी परंपरा से विभिन्न धार्मिक संस्कार करवाने वाले सम्मानित कौशल सिंह जी ने कार्यक्रम का आरंभ किया।

कृषि विभाग से डीडीए आत्मा परियोजना राजेश त्रिपाठी पहुंचे अपनी टीम के साथ| कार्यक्रम अधिकारी जगदीश रानी सिंह ने बताया कि द्वितीय दिवस के कार्यक्रम में कृषि विभाग से डीडीए आत्मा परियोजना राजेश त्रिपाठी, उचेहरा ब्लॉक के परस्मनिया पठार के लिए नवीन पदस्थ ग्रामसेवक गणेश प्रसाद पांडे, और उचेहरा ब्लॉक की आत्मा परियोजना ब्लॉक कोऑर्डिनेटर जेपी सिंह एवं संस्था के वरिष्ठ मार्गदर्शक एवं समाजसेवी डॉ जेआर. नारायण का आगमन हुआ। त्रिपाठी ने किसानों के लिए मृदा परीक्षण, सिंचाई विभाग की विभिन्न योजनाओं के बारे में बताते हुए श्रीअन्न के महत्व पर विस्तार से बात रखी।

पान की खेती में घट रहा किसानों का रुझान

नहीं छट पा रहे पान की खेती पर कोविड से छाए आफत के बादल

नरसिंहपुर। डॉ. बृजेश शर्मा

50 साल से पान की खेती कर रहे मिथलेश चौरसिया अब पान की खेती छोड़ना चाहते हैं। मार्च- अप्रैल 2020 में जब लॉकडाउन लगा तब उनकी करीब चार-पांच लाख रुपए की पान की फसल खेत में नष्ट हो गई। उस वक्त पान की खपत में आई गिरावट अब तक नहीं संभल सकी। बिक्री में मंदी से वह पान की खेती का रकबा एक से घटाकर आधा एकड़ करने पर मजबूर हो गए। देश के विभिन्न पान उत्पादक हिस्सों में मध्यप्रदेश का एक अहम स्थान है। प्रदेश के कई जिलों नरसिंहपुर, कटनी, सागर, टीकमगढ़, छतरपुर, पन्ना, सतना, रीवा नर्मदापुरम, नीमच, मंदसौर आदि जिलों में पान की खेती होती है लेकिन अब यह खेती बुरे वक्त से गुजर रही है। वैसे यह बुरा वक्त लॉकडाउन मार्च-अप्रैल 2020 से जो शुरू हुआ तो अब भी कायम है। पिछले चार-पांच वर्षों में पान की खेती का रकबा 50- 55 हजार हेक्टेयर से घटकर एक चौथाई ही बचा है। पिछले दो-तीन सालों में तो मौसम किसानों का बिल्कुल भी साथ नहीं दे रहा है। बेमौसम बारिश, आंधी-तूफान और ओलावृष्टि किसानों के लिए फजीहत का कारण हैं। हाल ही में अप्रैल 2024 को नरसिंहपुर जिले में झमाझम बारिश और कई स्थानों पर हुई ओलावृष्टि, तेज हवाओं ने किसानों को तंग कर दिया। कट कर रखी हुई फसल पानी में भीग गई। मई की शुरुआत में ही आंधी तूफान में ग्राम निवारी पान के एक किसान शिवनारायण (65)का पान बरेजा धड़ाम से गिर कर चौपट हो गया। शिवनारायण के पास पैसे नहीं है कि वह बांस- बल्ली, रस्सी, ग्रीन नेट आदि फिर खरीदें और बरेजे को खड़ा कर सकें। बरेजा गिरने से उसमें दब कर पान की फसल भी नष्ट हो गई। लगभग एक सप्ताह गुजर जाने के बाद भी आंधी से गिरे बरेजे को वह उठा नहीं सके।

पान की खेती से गांवों की पहचान

नरसिंहपुर जिले में पान की खेती ग्राम निवारी, पीपरपानी, बारहाबड़ा आदि गांवों में होती है। यह गांव पान की खेती के लिए ही जाने जाते हैं। शायद इसलिए ग्राम निवारी का पूरा नाम निवारी पान है। जिले के ग्राम निवारी की आबादी करीब 4000 है। इसमें 100 परिवार ऐसे हैं, जिनके जीवन यापन का साधन पान की खेती पर परंपरागत रूप से निर्भर है। यह परिवार लघु सीमांत किसान हैं।

इन गांवों के किसान भी मुश्किल में

ग्राम बारहाबड़ा के एक किसान सरल सोनी कहते हैं कि अप्रैल के पहले मार्च में बारिश और तेज हवाओं, ओलों से उनकी फसल तबाह हो गई। इसके पहले जनवरी के दूसरे पखवाड़े में जबरदस्त ठंड से उनके पान के पत्ते तुषार, पाले से ग्रस्त हो गए, झुलस गए। उनके खेत के एक हिस्से में लगी मसूर भी शत प्रतिशत नष्ट हो गई। लेकिन सर्वेक्षण के लिए कोई नहीं आया। ग्राम निवारी के किसान मिथिलेश चौरसिया कहते हैं कि मौसम के साथ-साथ बाजार भी उनके अनुकूल नहीं रहा। पान की खपत कम होने से व्यवसाय पूरी तरह प्रभावित हो गया। मिथिलेश बताते हैं कि कोरोना के पहले से उनके खेत के पान नरसिंहपुर जिले के स्थानीय बाजार की पूर्ति तो करते ही थे सागर, इटारसी, पिपरिया जबलपुर भी जाते थे। पान की खूब मांग रहती थी। यहां देसी किस्म का बंगला पान अच्छा होता है, लेकिन कोरोना के बाद से गुटका पाउच का व्यवसाय करोड़ों का और पान का व्यवसाय चंद हजार रु का रह गया। कटनी, सतना, पन्ना आदि क्षेत्र के पान उत्तरप्रदेश तरफ और नीमच, मंदसौर जिले के पान महाराष्ट्र के बाजार में जाते थे, लेकिन अब कोरोना के बाद से यह खपत घटकर 15 से 20 फीसदी ही रह गई है। इसलिए अब बहुत से किसान पान की खेती को राम-राम करना चाहते हैं। विरासत में मिली पान की खेती को 20 साल से संभाल रहे माखन चौरसिया (58) कहते हैं कि पान बिक्री बची नहीं, इसलिए कोरोना के बाद से एक एकड़ में होने वाली खेती को आधा एकड़ में कर दिया है। अब बच्चे कहते हैं कि इसे बंद कर दो, दूसरी फसल लगाओ। जिसमें फायदा हो। यहां के किसान पान के बरेजों में परबल और कुंदरू की बेल भी लगाते हैं ताकि पूरक तौर पर वह आमदनी का कुछ जरिया बने । दोनों सब्जी फलों के दाम बाजार में अच्छे मिलते जरूर है लेकिन यह बेल भी पान की तरह ही नाजुक होती है जिससे उपज कम होती है।

बीमा योजना में शामिल नहीं पान की खेती

पान की खेती को प्रधानमंत्री बीमा योजना का लाभ नहीं मिल पाता। चूंकि यह फसल हॉर्टिकल्चर यानी उद्यानिकी के तहत है। इसलिए इसे आरबीसी 6 - 4 के तहत ही लाभ मिल पाता है, लेकिन अधिकांश किसान इसके प्रावधानों के कई मानकों की वजह से राहत से वंचित हो जाते हैं। जैसा कि मिथलेश आपबीती बताते हैं कि तुषार पाले से क्षतिग्रस्त हुई फसल के आकलन के लिए पटवारी मैडम आईं, लेकिन वह मौके पर नहीं मिल पाए तो उन्होंने कागज में ज्यादा नुकसान नहीं बताया, 50- 60 फीसदी नुकसान लिखा और चली गईं जबकि फसल पूरी तरह प्रभावित हुई। इससे क्षतिग्रस्त प्रभावित फसल का एक पैसा भी नहीं मिल पाय। मध्य प्रदेश पान उत्पादक संघ के प्रदेश अध्यक्ष बसंत चौरसिया कहते हैं कि उद्यानिकी की फसल को आरबीसी 6 - 4 के तहत ही राहत मिलने की प्रावधान है। मौसम की मार और पान की बिक्री में आई कमी की वजह से अब इसकी खेती प्रदेश भर में घट गई है । पहले 50 - 55 हजार किसान यह खेती करते थे जिनकी संख्या अब घटकर सिर्फ 12 से 15 हज़ार रह गई है । अगर हाल यही रहा तो आने वाले समय में यह खेती भी बंद हो जाएगा। प्रदेश अध्यक्ष चौरसिया कहते हैं कि पान की खेती को संरक्षण की जरूरत है। राज्य सरकार कुछ इस तरह की ठोस नीति बनाए कि किसान प्रोत्साहित होकर इस तरह की खेतीबाड़ी से जुड़े रहें अन्यथा वह दिन अब दूर नहीं कि दो - चार साल में पान की खेती पूरी तरह बंद करने की नौबत आ जाए। प्रदेश अध्यक्ष श्री चौरसिया कहते हैं कि कोरोना के बाद से पान किसान गंभीर आर्थिक संकट में हैं। वह टूटे हुए हैं। प्रदेश भर में पान किसानों की स्थिति गंभीर है। इसलिए सरकार को पान की खेती और उसकी कई किस्म को बचाने के लिए जल्दी निर्णय लेना होगा।

..तो आने वाले दो-चार वर्ष में ही बचा खुचा रकबा भी काफी सिमट जाएगा

खेती बाड़ी को लेकर हमारे बूढ़े बुजुर्ग भी कहते आए हैं कि देश की खेती-किसानी उस अपंग की तरह है जो दो बैसाखियों पर टिकी है। एक बैसाखी है मौसम, तो दूसरी बाजार। कोई एक बैसाखी भी थोड़ी भी गड़बड़ हुई तो किसान साल भर लड़खड़ाता है। पान की खेती की दोनों बैसाखी पिछले कुछ वर्षों में गड़बड़ हो गई हैं, जिससे लड़खड़ाते किसान अब इस खेती-बाड़ी को छोड़ने मजबूर हो रहे हैं। बकौल युवा किसान सचिन चौरसिया पान की बिक्री कोरोना से इतनी कमजोर हो गई है कि 2- 3 साल में ही इसकी खेती छोड़ने के अलावा कोई दूसरा विकल्प नहीं है। पान के किसानों के लिए बिगड़े मौसम और ठप हुए बाजार ने उनके व्यवसाय की कमर तोड़ दी है। पहले इस खेती से अच्छी आमदनी होती थी कई मजदूर इसमें लगे रहते थे, लेकिन कोरोना के बाद से यह सब बंद हो गया।

भारतीय परंपरा में पान का महत्व

भारतीय पंरपंराएं बहुत गहरीं हैं। इन परंपराओं में श्रृंगार का काफी महत्व है, हर तरह के श्रृंगार में एक श्रृंगार होठों का भी है जिसे अधर श्रृंगार कहते हैं। यह श्रृंगार पान से होता है। पान खाने के अपने फायदे हैं कहते हैं कि इसके सेवन से शरीर में कैल्शियम की कमी पूरी हो जाती है। धार्मिक कार्यों में पूजा पाठ में भी पान का उपयोग होता है। इसे कहीं पान तो कहीं बीड़ा, तो कहीं तांबूल कहते हैं।

मशहूर पान दुकानें बंद

पान की दुकान जो कभी हर गली मोहल्ले में हुआ करती थीं और शहर की कुछ दुकानें जो अपने पान के लिए मशहूर हुआ करतीं थी, अब इनमें से ज्यादातर नहीं बचीं। लिहाजा पान की मांग कम हुई और इसके साथ खेती भी। वहीं बची खुची कसर मौसम ने पूरी कर रहा है।

मिट्टी और जलवायु संतरे की खेती के लिए बेहद उपयोगी

मंदसौर जिले के गरोठ-भानपुरा के संतरे देशभर में फैला रहे मिठास

मंदसौर। जागत गांव हमार

मंदसौर जिले के गरोठ-भानपुरा क्षेत्र के संतरे देशभर में मिठास फैला रहे हैं। यहां के खेतों में उगने वाला संतरे देश के कोने-कोने तक जाते हैं। कई बार तो गरोठ-भानपुरा और शामगढ़ क्षेत्र के संतरों ने विदेशों तक देश की मिट्टी की खुशबू मिठास के रूप में पहुंचाई है। यहां की मिट्टी संतरे की खेती के लिए करिश्माई है। मंदसौर जिले में गरोठ और भानपुरा तहसील के अनेक गांवों में संतरे की खेती होती है। वर्तमान में खेतों में बने बगीचों में संतरे पक गए हैं। डिमांड इतनी है कि खेतों में ही यूपी, हरियाणा, गुजरात सहित अन्य राज्यों के संतरों के बड़े व्यापारी खरीदारी के लिए पहुंचने लगे हैं।

मिट्टी और जलवायु संतरे की खेती के लिए उपयोगी- मंदसौर जिले में गरोठ और भानपुरा तहसील के अनेक गांवों में संतरे की खेती होती है। किसान बताते हैं कि मिट्टी और जलवायु संतरे की खेती के लिए बेहद उपयोगी है, इसलिए यहां के संतरों में एक अलग मिठास मिलती है और देशभर में यहां का संतरा पसंद किया जाता है। इन दिनों पेड़ों पर संतरे झूम रहे हैं।

व्यापारी खेतों में पहुंचने लगे

कोटड़ाबुजुर्ग और आसपास के अधिकांश किसानों के संतरों को खरीदने के लिए व्यापारी अब खेतों में ही पहुंचने लगे हैं। किसान पूर्व सरपंच बाबूलाल पाटीदार व श्याम पाटीदार ने बताया कि मप्र के साथ ही पानीपत (हरियाणा) व यूपी से व्यापारी अब तक आ चुके हैं। किसान संतोष बैरागी, काशीराम पाटीदार ने बताया अभी संतरा 15 से 20 रुपए किलो तक बिक रहा है। इसके अलावा किसान भवानीमंडी में संतरे बेचते हैं। अप्रैल माह तक संतरों की मंडी गुलजार रहेगी।

एक पौधे पर ढाई से पांच क्विंटल तक पैदावार

किसानों के अनुसार गरोठ-भानपुरा की मिट्टी संतरों की खेती के लिए बहुत उपयोगी और लाभकारी है। संतरे का पौधा लगाने के बाद चार साल में यह पेड़ बन जाता है और फल देने लगता है। किसानों के अनुसार एक पौधे पर कम से कम ढाई क्विंटल और अधिकतम पांच क्विंटल तक संतरों की पैदावार होती है। किसानों के अनुसार वर्तमान में 40 किलो संतरे का एक कैरेट 500 से 900 रुपये तक में बिक रहा है। जिन बगीचों में 500 से अधिक पौधे होते हैं व्यापारी सीधे वहीं खरीदी के लिए पहुंच जाते हैं और वहीं से लोडिंग वाहनों में भरकर संतरों को ले जाया जाता है।

41 नंबर सबसे बड़ा और 96 और 205 नंबर सबसे छोटे कहलाते हैं

मंदसौर जिले के संतरों की देशभर से मांग के साथ ही वर्ष 2021 में यहां का संतरा नेपाल भी पहुंचा था। तुलसीराम गायरी ने बताया कि पूर्व में नेपाल तक हमारे यहां का संतरा गया है। इससे पहले भी कई देशों तक मंदसौर के संतरे पहुंचे हैं। खाने में ज्यूस में ही उपयोग होता है। 41 नंबर यानी बड़ा संतरा, 71 नंबर मीडियम एवं 96 और 205 छोटे संतरे कहलाते हैं। इन नंबरों के आधार पर दामों में अंतर हो जाता है।

मंदसौर के संतरों को इसलिए कहा जाता है नागपुरी संतरा

मंदसौर जिले से देशभर में पहुंचने वाला संतरा नागपुरी संतरा के नाम से पहचाना जाता है। किसान कमलेश प्रजापति ने बताया कि क्षेत्र में खेतों में संतरे के बगीचे तैयार करने के लिए किसान पौधे नागपुर से ही लाते है, नागपुर के पौधों को क्षेत्र की जमीन खूब भा रही है और उत्पादन भी खूब होता है। यही कारण है कि मंदसौर के संतरों को नागपुरी संतरा कहा जाता है। संतरे के उत्पादन के कारण ही मंदसौर को छोटा नागपुर भी कहा जाता है।

कम लागत में कमा रहीं ज्यादा मुनाफा

जैविक खेती ने दीदियों की बदली जिंदगी डेढ़ महीने में कमाए करीब पांच लाख रु.

बालाघाट। जागत गांव हमार

धैर्य, जज्बे और नवाचार के माध्यम से जिले की महिलाएं सफलता की नई कहानी लिख रही हैं। जो महिलाएं कुछ महीने पहले तक घर-गृहस्थी के कामों में उलझीं रहती थीं, वह अब आत्मनिर्भर बनकर नजीर पेश कर रही हैं। आजीविका मिशन के तहत आदिवासी और नक्सल प्रभावित ब्लाक लांजी के सुदूर गांवों में संचालित स्व सहायता समूहों की महिलाएं जैविक खेती से लखपति बन रही हैं। ग्राम ठेमा में शक्ति आजीविका समूह की दस में से तीन दीदियों ने अपनी पुश्तैनी 4.5 एकड़ की जमीन में मार्च महीने में खीरा (ककड़ी), बैगन, बरबट्टी को जैविक खेती के जरिए उगाया। महज डेढ़ महीने में खीरे की खेती ने तीनों दीदियों की किस्मत बदल दी। शक्ति आजीविका समूह की दुर्गा कुराहे ने बताया कि उन्होंने 4.5 एकड़ रकबे में खीरा, बैगन सहित अन्य सब्जियां लगाई थीं, जिसमें सबसे अधिक पैदावार खीरे की हुई है। जैविक खेती के इस प्रयोग में उन्होंने करीब तीन लाख रुपये निवेश किए थे और डेढ़ महीने में ही उन्हें करीब पांच लाख रुपये का मुनाफा हुआ है। शक्ति आजीविका समूह की दुर्गा कुराहे ने बताया कि वह कुछ महीने पहले तक आम महिला की तरह घर की जिम्मेदारी संभाल रही थीं। इसके बाद विशेषज्ञों के माध्यम से जैविक खेती का प्रशिक्षण लिया। विशेषज्ञों की प्रेरणा और आजीविका मिशन के सहयोग से समूह की अन्य महिलाओं के साथ खेती करने की योजना बनाई। साथ ही सुलोचना कुराहे व ऊषा कुराहे के साथ मिलकर हमने अपनी जमीन में सब्जी उगाना शुरू किया। बेहद कम समय में ही कम लागत में उन्हें अधिक मुनाफा हुआ है। उनके खेत के उगे खीरे महाराष्ट्र व छत्तीसगढ़ राज्य के शहरों (नागपुर, रायपुर, राजनांदगांव, भिलाई, दुर्ग आदि) में निर्यात हो रहे हैं। रोज बड़ी मात्रा में खीरा, भट्टा, बरबट्टी तोड़ी जाती है। इसके अलावा हाल ही में उन्होंने अपने खेत में उगा 15 क्विंटल बैगन भी बाजार में बेचा है। शक्ति आजीविका समूह में कुल दस महिलाएं हैं, जिसमें तीन महिलाओं ने सब्जी की खेती का नवाचार किया है। शेष सात महिलाएं भी खेती में सहयोग करती हैं।

छह दीदियों ने बदली राह, मिलकर कर रहीं जैविक खेती

लांजी के ही ग्राम बड़गांव में वर्षा स्व सहायता समूह की 13 में से छह महिलाएं भी आत्मनिर्भर बन रही हैं। उन्होंने जैविक खेती का प्रशिक्षण प्राप्त कर अपनी जमीन में खीरा, भिंडी, लौकी, भाजी, बरबट्टी, हरी मिर्च आदि की खेती शुरू की। समूह की सदस्य मीरा टिकेश्वर ने बताया कि कुछ सितंबर-अक्टूबर माह में उन्होंने 30 डिसमिल जमीन में हरी मिर्च लगाई थी, जिसमें जैविक दवाइयों सहित मजदूरी, मिर्च के बीज आदि करीब पांच हजार रुपए का खर्च आया था। अच्छी पैदावार होने से उन्हें 35 से 40 हजार रुपए का शुद्ध मुनाफा हुआ है। इसी तरह फरवरी में एक एकड़ रकबे में ककड़ी की फसल लगाई थी, जिसमें अच्छी आमदनी हो रही है। उनके खेत में उगे खीरे लांजी सहित अन्य ब्लाकों व पड़ोसी राज्यों के शहरों में निर्यात हो रहे हैं। वर्षा आजीविका समूह में मीरा टेकेश्वर के साथ जयवंता कावरे, उर्मिला मानकर, पप्पी पांचे, ललिता पांचे और लक्ष्मीबाई ठाकरे नवाचार करते हुए खेती में किस्मत आजमा रही हैं।

समूह की महिलाओं की काउंसिलिंग की, प्रशिक्षण दिया

आजीविका मिशन के लांजी ब्लाक की एबीएम सुनीता चंदने ने बताया कि हमारा प्रयास समूह की महिलाओं को आत्मनिर्भर लखपति दीदियों की श्रेणी में लाना है। इसके लिए समूह की मीरा टिकेश्वर की काउंसिलिंग की गई और महिलाओं की मेहनत व लगन देखकर उन्हें 'कृषि सखी' भी बनाया। उनके द्वारा अन्य महिलाओं को प्रशिक्षण दिया जा रहा है। मीरा द्वारा वनस्पति से बननी वालीं दवाइयों के उपयोग और फायदों के बारे में अन्य महिलाओं को बताती हैं। ग्राम संगठन की बैठकों में महिलाओं के साथ उनके अधिकारों, जैविक खेती की संभावनाओं जैसे विषयों पर चर्चा करते हैं। महिलाओं को राष्ट्रीय ग्रामीण आर्थिक परिवर्तन परियोजना द्वारा उन्नत खेती का प्रशिक्षण दिया गया। मीरा टिकेश्वर ने बताया कि हमने प्रशिक्षण केंचुआ खाद तैयार करना सीखा, जिससे फसलों की अच्छी पैदावार में मदद मिली।

वैज्ञानिकों और कर्मचारियों को स्वच्छता की शपथ दिलाई गई

रीवा। जागत गांव हमार

कृषि विज्ञान केन्द्र रीवा मप्र में कृषि वैज्ञानिकों एवं कर्मचारियों ने स्वच्छता की शपथ ली। केंद्र के प्रमुख डॉ. एके पांडेय ने कहा कि अपने आसपास साफ सफाई रखने जीवन की गुणवत्ता बढ़ती है और संक्रामक बीमारियों से लड़ने की क्षमता भी बढ़ती है। कार्यक्रम के संयोजक डॉ. अखिलेश कुमार ने बताया स्वच्छता से निकलने वाले गीला और सूखा कचरे का उपयोग खाद बनाने में होता है, जिससे मिट्टी की उर्वरा शक्ति बढ़ती है और फसलों का उत्पादन बढ़ता है। मनुष्य को अपने दैनिक जीवन में स्वच्छता को शामिल करना चाहिए। स्वच्छ भारत मिशन की शुरुआत 2 अक्टूबर 2014 को हुई जो व्यापक तौर पर एक राष्ट्रीय आंदोलन के रूप में था। जिसका प्रभाव ये है कि आज गांव व शहर साफ सफाई देखी जा रही है। इस अवसर पर केंद्र के अन्य वैज्ञानिकों ने अपने विचार रखे, जिसमें प्रमुख रूप से डॉ. राजेश सिंह, एके पटेल, डॉ. संजय सिंह, डॉ. केएस बघेल, संदीप शर्मा, मंजू शुक्ला एवं निर्मला शामिल रहे।

जागत गांव हमार के सुधि पाठकों...

» जागत गांव हमार कृषि, पंचायत और ग्रामीण विकास आधारित समाचार पत्र है, जिसके लिए आपका स्नेह और प्यार हमें शुरू से मिलता रहा है। हम आशा और विश्वास करते हैं कि आगे भी मिलता रहेगा।

» समाचार पत्र के लिए विशेषज्ञों की राय, प्रकाशन योग्य सामग्री के साथ-साथ आपके समक्ष इसे पहुंचाने तक हमारी जिम्मेदारी बड़ी चुनौतीपूर्ण है। आपके सहयोग से ही हम इस चुनौती का सामना कर पाएंगे।

» ऐसे में हमारी आपसे अपेक्षा और आग्रह है कि जागत गांव हमार के वार्षिक सदस्य बनें और इसके लिए नीचे लिखे गए नंबर पर संपर्क करें।

संपर्क करें- अजय द्विवेदी-9229497393, 94250485889

"आपका सहयोग हमारी मजबूती का आधार बनेगा"

स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक अजय कुमार द्विवेदी द्वारा जय माता प्रिंटर्स, मं.नं.1, पेमदीपुरा बापू कालोनी के पास चिकलोद रोड, जहांगीराबाद, भोपाल(मप्र) से मुद्रित एवं एमआईजी 30, शिवकल्प, अयोध्या बाईपास भोपाल, मप्र से प्रकाशित। संपादक: अजय कुमार द्विवेदी, **संपर्क** -9229497393, 9425048589, ईमेल:- jagatgaon.bpl@gmail.com (सभी विवादों का न्याय क्षेत्र भोपाल होगा)